उन्नति

वर्ष 03
अंक:04

जनवरी–मार्च, 2026

अनुविनि
nsfdc

एक कदम स्वच्छता की ओर

नेशनल शेड्यूलड कास्ट्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन

(सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार का उपक्रम)

वक्रतुण्ड महाकाय, सूर्यकोटि समप्रभ। निर्विघ्नं कुरू मे देव, सर्वकार्येषु सर्वदा।

उन्नति

जनवरी–मार्च (त्रैमासिक), 2025 वर्ष 03 अंक 04

मुख्य संरक्षक

श्री प्रभात त्यागी, अध्यक्ष–सह–प्रबंध निदेशक

संरक्षक

श्री सी. रमेश राव, मुख्य महाप्रबंधक

मार्गदर्शक

श्री डेविड रांगते, महाप्रबंधक

मुख्य संपादक

श्रीमती अर्चना मेहरा

विभागीय/संपादन सहयोग

श्री रतिकांत जेना, महाप्रबंधक

श्रीमती अन्नु भोगल, महाप्रबंधक

श्री सपन बरूआ, महाप्रबंधक

संपादक मंडल

श्री सुरेंद्र कुमार, उप प्रबंधक,

श्री महेश चन्द, सहायक प्रबंधक

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। निगम का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए संबंधित लेखक स्वयं जिम्मेदार हैं।

पत्राचार का पता

14वीं मंजिल, स्कोप मीनार, कोर 1 व 2, उत्तरी टावर, लक्ष्मी नगर जिला केंद्र, लक्ष्मी नगर, दिल्ली –110 092

फोन नः 011–22054392/94/96 फैक्स : 011–22054349/95 टोल फ्री नंबर : 1800110396

ई–मेल : nsfdc.hindideptt@gmail.com वेबसाईट : www.nsfdc.nic.in

विषय सूची

क्रम	रचना / आलेख	रचनाकार	पृष्ठ
1.	भारत का संविधान की उद्देशिका		2
2.	वंदे मातरम		3
3.	एनएसएफडीसीः मिशन, विजन और उद्देश्य		4
4.	मुख्य संरक्षक का संदेश	श्री प्रभात त्यागी, अध्यक्ष–सह–प्रबंध निदेशक	5
5.	संरक्षक का उद्‌बोधन	श्री सी. रमेश राव, मुख्य महाप्रबंधक	6
6.	मार्गदर्शक की कलम से	श्री डेविड रांगते, महाप्रबंधक	7
7.	संपादकीय	श्रीमती अर्चना मेहरा, मुख्य प्रबंधक	8
9.	गतिविधियाँ – प्रशासन विभाग	श्री हरीभजन, प्रबंधक	10
10.	गतिविधियाँ – मानव संसाधन विभाग	श्री सुशील कुमार शर्मा	12
10	गतिविधियाँ – राजभाषा और राजभाषा प्रगति	श्री सुरेंद्र कुमार, उप प्रबंधक	13
11	पाँच पैसे का आरोप और चालिस वर्षों का संघर्ष	श्री देवानन्द, पूर्व मुख्य महाप्रबंधक	20
12	विश्व हिंदी दिवस	श्री रजनीश बनकर, उप महाप्रबंधक	22
13	हिंदी साहित्यिक जगत को समृद्ध करतीं प्रमुख महिला साहित्यकार और उनकी विशेषताएँ	श्रीमती पूनम सुभाष, पूर्व मुख्य राजभाषा अधिक्षक, एचपीसीएल	25
14	डिजिटल युग में हिंदीः अवसर और चुनौतियाँ	श्री वरूण शर्मा, सहायक महाप्रबंधक	31
15	स्तंभ – शाब्दिक अंतर और प्रयोग	श्रीमती अर्चना मेहरा, मुख्य प्रबंधक	33
16	गजल – मुश्किल है...	श्री पुखराज मीना, सहायक प्रबंधक	34
16	स्तंभ – पुस्तकालय कोना इस तिमाही के साहित्यकार	श्रीमती ज्योति रानी, कनिष्ठ सहायक	39
19	जन्म दिन की बधाई	श्री सुशील कुमार शर्मा, प्रबंधक	44
20	एनएसएफडीसी की ऋण योजनाएं		

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**
प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में** व्यक्ति की गरिमा और
राष्ट्र की एकता और अखंडता
सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हज़ार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

वन्दे मातरम्।

सुजलाम् सुफलाम् मलय़जशीतलाम्,
शस्यश्यामलाम् मातरम्। वन्दे मातरम्।। 1।।

शुभ्रज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम्,
फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्,
सुखदाम् वरदाम् मातरम्। वन्दे मातरम्।। 2।।

कोटि-कोटि कण्ठ कल-कल निनाद कराले,
कोटि-कोटि भुजैर्धृत खरकरवाले,
के बॉले माँ तुमि अबले,
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीम्,
रिपुदलवारिणीं मातरम्। वन्दे मातरम्।। 3।।

तुमि विद्या तुमि धर्म, तुमि हृदि तुमि मर्म,
त्वम् हि प्राणाः शरीरे, बाहुते तुमि माँ शक्ति,
हृदय़े तुमि माँ भक्ति, तोमारेई प्रतिमा गड़ि मन्दिरे-मन्दिरे।
वन्दे मातरम् ।। 4।।

त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी,
कमला कमलदलविहारिणी,
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्,
नमामि कमलाम् अमलाम् अतुलाम्,
सुजलां सुफलां मातरम्। वन्दे मातरम्।। 5।।

श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्,
धरणीम् भरणीम् मातरम्। वन्दे मातरम्।। 6।।

एनएसएफडीसी मिशन, विजन और लक्ष्य

1.1 Vision

To be the leading catalyst in systematic reduction of poverty through socio-economic development of eligible Scheduled Castes, working in an efficient, responsive and collaborative manner with channelizing agencies and other development partners

1.2 Mission

Promote prosperity among Scheduled Castes by improving flow of financial assistance and through skill development & other innovative initiatives.

1.3 Objectives

(i) Identification of trades & other economic activities of importance to Scheduled Castes population.

(ii) Upgrapdation of skills & processes used by persons belonging to Scheduled Castes.

(iii) Promotion of Small, Cottage & Village Industries.

(iv) Financing of pilot programmes for upliftment and economic welfare of persons belonging to Scheduled Castes.

(v) Improvement in flow of financial assistance to persons belonging to Scheduled Castes for their economic well-being.

(vi) Assistance to target group in setting up their projects by way of project preparation, training and financial assistance.

(vii) Extending loans to eligible students belonging to Scheduled Castes for pursuing full-time professional and technical courses in India and abroad.

(viii) Extending loans to eligible youth to enhance their skill & employability by pursuing vocational education & training courses in India.

1.1 विजन

अनुसूचित जाति के पात्र व्यक्तियों के सामाजिक–आर्थिक विकास के माध्यम से व्यवस्थित प्रकार से गरीबी को कम करने के लिए चैनलाइजिंग एजेंसियों और अन्य विकास भागीदारों के साथ प्रभावी, उत्तरदायी और सहयोगात्मक तरीके से प्रमुख उत्प्रेरक के रूप में कार्य करना।

1.2 लक्ष्य

वित्तीय सहायता के प्रवाह में सुधार और कौशल विकास एवं अन्य नवीन पहलों के माध्यम से अनुसूचित जातियों की समृद्धि को बढ़ावा देना।

1.3 उद्देश्य

(i) अनुसूचित जाति की आबादी के लिए ट्रेडों और अन्य महत्वपूर्ण आर्थिक क्रियाकलापों की पहचान करना।

(ii) अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के कौशल और उनके द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली प्रक्रियाओं को उन्नत बनाना।

(iii) छोटे, कुटीर और ग्रामीण उद्योगों को बढ़ावा देना।

(iv) अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के उत्थान और आर्थिक कल्याण के लिए विशेष कार्यक्रमों को वित्त पोषित करना।

(v) अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के आर्थिक कल्याण के लिए उनके वित्तीय सहायता के प्रवाह में सुधार करना।

(vi) लक्ष्य समूह को अपनी परियोजना स्थापित करने के लिए परियोजना तैयार करने, प्रशिक्षण और वित्तीय सहायता के लिए सहयोग प्रदान करना।

(vii) भारत और विदेश में पूर्णकालिक व्यावसायिक/तकनीकी पाठ्यक्रमों में शिक्षा प्राप्त करने के लिए अनुसूचित जाति के पात्र छात्रों को ऋण प्रदान करना।

(viii) पात्र युवाओं को भारत में वोकेशनल (व्यावसायिक) शिक्षा और प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में अध्ययन करने के बाद कौशल और नियोजनीयता में वृद्धि करने के लिए ऋण प्रदान करना।

अध्यक्ष–सह–प्रबंध निदेशक का संदेश

राजभाषा हिंदीः प्रगति, पारदर्शिता और सशक्तिकरण का आधार

प्रिय साथियों,

'उन्नति' के इस नवीन अंक के प्रकाशन के अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

राजभाषा हिंदी हमारी सांस्कृतिक विरासत की संवाहक होने के साथ–साथ प्रशासनिक कार्यों को सरल, प्रभावी एवं पारदर्शी बनाने का एक सशक्त माध्यम है। यह न केवल हमारी अभिव्यक्ति को सुदृढ़ करती है, बल्कि संगठन और आमजन के बीच संवाद को भी अधिक सहज एवं आत्मीय बनाती है।

नेशनल शेड्यूल्ड कास्ट्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन का उद्देश्य सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण के साथ–साथ संवाद की सुगमता सुनिश्चित करना है। इस संदर्भ में हिंदी का व्यापक प्रयोग हमारे लक्ष्यों की प्राप्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। निगम द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में स्थापित मानकों को और अधिक सुदृढ़ करते हुए हमें निरंतर प्रगति की दिशा में अग्रसर रहना है।

वर्तमान डिजिटल युग में हिंदी की प्रासंगिकता और भी अधिक बढ़ गई है। यह आवश्यक है कि हम तकनीकी एवं प्रशासनिक दोनों स्तरों पर हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दें, जिससे कार्यप्रणाली अधिक समावेशी एवं प्रभावी बन सके।

मैं सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपेक्षा करता हूँ कि वे अपने दैनिक कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें तथा राजभाषा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन में सक्रिय योगदान दें।

'उन्नति' के इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

सादर,

(प्रभात त्यागी)
अध्यक्ष–सह–प्रबंध निदेशक

संरक्षक की कलम से

प्रबंधन का दृष्टिकोण

प्रिय साथियों,

राजभाषा हिंदी का प्रभावी उपयोग हमारे प्रशासनिक कार्यों को सरल, पारदर्शी और जनोन्मुख बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह केवल एक औपचारिक आवश्यकता नहीं, बल्कि कार्यकुशलता और बेहतर संप्रेषण का सशक्त माध्यम है।

कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना हमारी प्राथमिकताओं में शामिल है। नोटिंग, ड्राफ्टिंग, पत्राचार तथा रिपोर्टिंग जैसे कार्य यदि हिंदी में सहजता से किए जाएँ, तो न केवल कार्य की गति बढ़ती है, बल्कि उसका प्रभाव भी व्यापक होता है। सरल और स्पष्ट हिंदी का उपयोग हमें अधिक प्रभावी बनाता है।

डिजिटल युग में हिंदी की उपयोगिता और भी बढ़ गई है। ई–ऑफिस, ई–मेल, डिजिटल फाइलिंग, तथा विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर हिंदी में कार्य करना अब पहले से कहीं अधिक आसान हो गया है। यूनिकोड, वॉइस टाइपिंग और विभिन्न सॉफ्टवेयर टूल्स ने हिंदी को तकनीकी रूप से सशक्त बनाया है। हमें इन साधनों का अधिकतम उपयोग करना चाहिए, ताकि हिंदी डिजिटल कार्य संस्कृति का अभिन्न हिस्सा बन सके।

इस दिशा में कर्मचारियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी यदि अपने दैनिक कार्यों में हिंदी को अपनाने का संकल्प ले, तो राजभाषा के लक्ष्यों को सहजता से प्राप्त किया जा सकता है। प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं एवं प्रतियोगिताओं में सक्रिय भागीदारी से न केवल ज्ञान बढ़ता है, बल्कि आत्मविश्वास भी विकसित होता है।

आइए, हम सभी मिलकर हिंदी को कार्य की सहज और प्रभावी भाषा बनाएं तथा संगठन के उद्देश्यों की पूर्ति में अपनी सक्रिय भूमिका निभाएँ।

शुभकामनाओं सहित,,

(सी. रमेश राव)
मुख्य महाप्रबंधक, दिल्ली

मार्गदर्शक का संदेश

कार्य संस्कृति में हिंदी का सशक्त विस्तार

प्रिय साथियों,

'उन्नति' के इस नवीन अंक के प्रकाशन के अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी कार्यसंस्कृति को सरल, सहज एवं प्रभावी बनाने का सशक्त माध्यम है। हिंदी में कार्य करने से न केवल संप्रेषण अधिक स्पष्ट एवं पारदर्शी होता है, बल्कि कार्यों की समझ और निष्पादन में भी उल्लेखनीय सुधार होता है।

वर्तमान तकनीकी परिवेश में हिंदी ने एक नई पहचान स्थापित की है। डिजिटल प्लेटफॉर्म, ई–ऑफिस तथा अन्य आधुनिक तकनीकी साधनों के माध्यम से हिंदी में कार्य करना अब पहले की अपेक्षा अधिक सरल, सुगम एवं प्रभावी हो गया है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि हम इन संसाधनों को अपनाने के प्रति सकारात्मक पहल करें।

राजभाषा के प्रभावी क्रियान्वयन में कर्मचारियों की सक्रिय सहभागिता अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी अपने स्तर पर हिंदी में कार्य करने का सतत प्रयास करे, तो संगठन में हिंदी का प्रयोग स्वाभाविक रूप से बढ़ेगा और यह हमारी कार्यप्रणाली का अभिन्न अंग बन जाएगा।

आइए, हम सभी मिलकर हिंदी को कार्य की सहज एवं प्रमुख भाषा बनाने का संकल्प लें तथा संगठन की प्रगति में अपना सक्रिय योगदान सुनिश्चित करें।

'उन्नति' के इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु सभी रचनाकारों एवं राजभाषा कक्ष की टीम को हार्दिक शुभकामनाएँ।

सादर,

(डेविड रांगते)
महाप्रबंधक

संपादकीय

उन्नति : विचार, भाषा और विकास का समन्वित स्वर

प्रिय पाठकों,

'उन्नति' के जनवरी–मार्च 2026 अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष एवं आत्मसंतोष का अनुभव हो रहा है। 'उन्नति' पत्रिका नेशनल शेड्यूल्ड कास्ट्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (एनएसएफडीसी) की विविध गतिविधियों, उपलब्धियों, विशिष्ठ पहलों और रचनात्मक प्रयासों का सजीव दर्पण है, जिसमें विचार, भाषा, साहित्य और सामाजिक प्रतिबद्धता का सुंदर समन्वय को सशक्त रूप से अभिव्यक्त करती है ।

इस अंक की शुरुआत राष्ट्र की मूल भावना को अभिव्यक्त करने वाली 'भारत के संविधान' की उद्देशिका तथा 'वंदे मातरम्' जैसे प्रेरणास्रोतों से होती है, जो हमें अपने राष्ट्रीय मूल्यों, कर्तव्यों, देश भक्ति, सम्मान की भावना और आदर्शों के प्रति सजग रहने की प्रेरणा देते हैं। इसके साथ ही एनएसएफडीसी : मिशन, विजन और उद्देश्य लेख के माध्यम से निगम की कार्यप्रणाली, लक्ष्य एवं सामाजिक प्रतिबद्धता का समग्र परिचय प्राप्त होता है।

मुख्य संरक्षक का संदेश, संरक्षक का उद्‌बोधन एवं मार्गदर्शक की कलम से जैसे खंड इस अंक को विशेष गरिमा प्रदान करते हैं। इन संदेशों में न केवल संगठन की नीतिगत दिशा का मार्गदर्शन निहित है, बल्कि कर्मचारियों के लिए प्रेरणा, उत्तरदायित्व और सकारात्मक कार्यसंस्कृति का संदेश भी समाहित है।

इस अंक में निगम की गतिविधियों को समर्पित विभिन्न अनुभाग – मानव संसाधन विभाग, प्रशासन विभाग, राजभाषा एवं राजभाषा प्रगति तथा एनएसएफडीसी की विविध गतिविधियाँ–हमारी निरंतर प्रगति, पारदर्शिता और दक्षता का सजीव प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। विशेष रूप से राजभाषा हिंदी के प्रोत्साहन हेतु आयोजित कार्यशालाएँ, प्रशिक्षण कार्यक्रम, प्रतियोगिताएँ तथा तिमाही समीक्षा गतिविधियाँ यह दर्शाती हैं कि हमारा संगठन प्रशासनिक उत्कृष्टता के साथ–साथ भाषाई समृद्धि के प्रति भी समान रूप से प्रतिबद्ध है।

साहित्यिक और वैचारिक दृष्टि से यह अंक अत्यंत समृद्ध और बहुआयामी है। 'विश्व हिंदी दिवस' पर आधारित श्री रजनीश बनकर जी का लेख हिंदी के वैश्विक विस्तार और उसके महत्व को रेखांकित करता है। वहीं श्रीमती पूनम सुभाष जी का 'हिंदी साहित्यिक जगत को समृद्ध करतीं प्रमुख महिला साहित्यकार और उनकी विशेषताएँ' लेख नारी सृजनशीलता, संवेदनशीलता और साहित्यिक योगदान को सम्मानपूर्वक

प्रस्तुत करता है। श्री वरूण शर्मा जी का 'डिजिटल युग में हिंदीः अवसर और चुनौतियाँ' लेख वर्तमान तकनीकी परिदृश्य में हिंदी की संभावनाओं, चुनौतियों और भविष्य की दिशा पर सार्थक विमर्श प्रस्तुत करता है, जो पाठकों को नए दृष्टिकोण से सोचने के लिए प्रेरित करता है।

अंक के नियमित स्तंभ–शाब्दिक अंतर और प्रयोग, पुस्तकालय कोना, इस तिमाही के साहित्यकार तथा प्रशासनिक शब्दावली–ज्ञानवर्धन और भाषा–संवर्धन के महत्वपूर्ण माध्यम हैं। ये स्तंभ न केवल भाषा के शुद्ध एवं प्रभावी प्रयोग की ओर प्रेरित करते हैं, बल्कि साहित्यिक अभिरुचि और प्रशासनिक दक्षता को भी सुदृढ़ करते हैं।

इस अंक की साहित्यिक प्रस्तुति श्री पुखराज मीना जी की गजल 'मुश्किल है....' है, जो जीवन के संघर्ष, संवेदनाओं और आशा की लौ को अत्यंत मार्मिकता के साथ अभिव्यक्त करती है। यह रचना पाठकों के अंतर्मन को स्पर्श करते हुए उन्हें सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने और विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य बनाए रखने की प्रेरणा देती है।

संपादकीय के माध्यम से जनवरी से मार्च, 2026 तिमाही के इस अंक में अपनी मूल्यवान रचनाएँ, लेख और विचार प्रदान करने वाले सभी सम्मानित रचनाकारों, सहयोगियों एवं योगदानकर्ताओं के प्रति हार्दिक आभार एवं धन्यवाद व्यक्त करते हैं। उनके सहयोग, सृजनशीलता और समर्पण के बिना 'उन्नति' का यह समृद्ध और प्रभावी स्वरूप संभव नहीं हो पाता।

इसके अतिरिक्त जन्मदिन की बधाई जैसे आत्मीय अनुभाग संगठनात्मक परिवार की एकजुटता और सौहार्द को सुदृढ़ करते हैं, वहीं एनएसएफडीसी की ऋण योजनाएँ समाज के वंचित वर्गों के आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में निगम की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करती हैं।

'उन्नति' केवल एक गृह पत्रिका नहीं, बल्कि हमारे सामूहिक प्रयासों, उपलब्धियों, अनुभवों और सृजनशीलता का जीवंत दस्तावेज है। यह मंच हमें जोड़ता है, संवाद स्थापित करता है और हमें निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहने के लिए प्रेरित करता है।

हम आशा करते हैं कि यह अंक आपको न केवल जानकारी प्रदान करेगा, बल्कि आपके विचारों को समृद्ध करेगा और आपको सृजन तथा नवाचार के लिए प्रेरित करेगा। आपके बहुमूल्य सुझाव और रचनात्मक सहयोग हमें 'उन्नति' को और अधिक प्रभावी एवं उत्कृष्ट बनाने की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करेंगे।

आइए, हम सभी मिलकर इस पत्रिका को अपने विचारों, अनुभवों और सृजनशीलता से और अधिक समृद्ध बनाते हुए 'उन्नति' के इस सतत् अभियान को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाएँ।

शुभकामनाओं के साथ,

अर्चना मेहरा
मुख्य प्रबंधक

गणतंत्र के गौरव: 'विशेष अतिथियों' का भव्य स्वागत और दिल्ली भ्रमण

श्री हरीभजन, प्रबंधक (प्रशासन) के सौजन्य से

राष्ट्र के 77वें गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर भारत सरकार के सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय तथा नेशनल शेड्यूल्ड कास्ट्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन द्वारा चयनित 'विशेष अतिथियों' का हार्दिक अभिनंदन किया गया। यह अवसर उनके लिए केवल एक समारोह नहीं, बल्कि जीवन का अविस्मरण ीय अनुभव बन गया।

कर्तव्य पथ पर आयोजित भव्य परेड और राष्ट्र की विविधता, संस्कृति एवं परंपराओं को प्रदर्शित करती आकर्षक झाँकियों के साक्षी बने इन अतिथियों के चेहरों पर गर्व, उल्लास और आत्मीय संतोष स्पष्ट रूप से झलक रहा था। देश की एकता, शक्ति और सांस्कृतिक वैभव का यह जीवंत प्रदर्शन उनके लिए अत्यंत प्रेरण ादायक सिद्ध हुआ।

समारोह के उपरांत अतिथियों को इंडिया गेट एवं प्रधानमंत्री संग्रहालय जैसे ऐतिहासिक एवं आधुनिक महत्व के स्थलों का भ्रमण भी कराया गया। इस भ्रमण के दौरान उन्होंने न केवल भारत के गौरवशाली अतीत और आधुनिक विकास को निकट से देखा, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों एवं राष्ट्रीय भावना को भी गहराई से अनुभव किया।

अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए लाभार्थी शंकर लाल ने भावुक होकर कहा– "कर्तव्य पथ पर परेड देखना और देश के प्रधानमंत्री को इतने करीब से देखना मेरे लिए एक सपने जैसा था। सरकार के इस सम्मान ने हमें समाज की मुख्यधारा से जुड़ने का एक नया आत्मविश्वास दिया है।"

यह संपूर्ण आयोजन सामाजिक समावेशन, सशक्तिकरण एवं 'अंत्योदय' के संकल्प को साकार करने की दिशा में एक प्रेरणादायक पहल के रूप में सामने आया। इसने न केवल लाभार्थियों को सम्मान और पहचान दी, बल्कि उन्हें राष्ट्र की मुख्यधारा से जुड़ने और अपने जीवन में आगे बढ़ने के लिए नई ऊर्जा और आत्मविश्वास भी प्रदान किया।

77वें गणतंत्र दिवस के इसी गौरवमयी अवसर पर नई दिल्ली स्थित डॉ. अंबेडकर राष्ट्रीय स्मारक में आयोजित एक विशेष कार्यक्रम के दौरान माननीय केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार ने विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के लाभार्थियों के रूप में आमंत्रित 'विशेष अतिथियों' को 'सपोर्ट किट' प्रदान कर उनका उत्साहवर्धन करते हुए।

गतिविधियां – मानव संसाधन विभाग

श्री सुशील कुमार शर्मा,
प्रबंधक (मानव संसाधन)

श्रीमती सुधा, सहायक प्रबंधक एवं श्री गंगा सरन, वरिष्ठ सहायक की गरिमामयी सेवानिवृत्ति

एनएसएफडीसी प्रधान कार्यालय के प्रशासन विभाग में कार्यरत श्रीमती सुधा, सहायक प्रबंधक एवं श्री गंगा सरन, वरिष्ठ सहायक दिनांक 31 मार्च, 2026 को अधिवर्षता की आयु पूर्ण करने उपरांत अपनी दीर्घ एवं उल्लेखनीय सेवाओं के पश्चात सेवानिवृत्त हुए। इस अवसर पर निगम परिवार ने दोनों अधिकारियों के प्रति सम्मान एवं कृतज्ञता व्यक्त करते हुए उनके योगदान को स्मरण किया।

श्रीमती सुधा ने दिनांक 16 मई, 1994 को निगम में अपनी सेवाएं प्रारंभ की थीं। लगभग 32 वर्षों के अपने लंबे सेवाकाल में उन्होंने अत्यंत निष्ठा, समर्पण एवं उत्तरदायित्वपूर्ण भावना के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन किया। अपने सौम्य व्यवहार, कार्यकुशलता एवं सकारात्मक कार्यशैली के कारण वे सहकर्मियों के मध्य सदैव सम्मानित रहीं। प्रशासनिक कार्यों के सफल संचालन में उनका योगदान सराहनीय रहा तथा उन्होंने अपने अनुभव एवं दक्षता से विभागीय कार्यों को सुचारु रूप से संपादित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इसी प्रकार, श्री गंगा सरन ने दिनांक 10 मई 1991 से निगम में अपनी सेवाएं प्रदान करना प्रारंभ किया। लगभग 35 वर्षों की लंबी सेवा अवधि में उन्होंने अपनी कार्यनिष्ठा, अनुशासन एवं समर्पित कार्यशैली से निगम को महत्वपूर्ण योगदान दिया। अपने शांत एवं सहयोगात्मक स्वभाव के कारण वे सहकर्मियों के बीच अत्यंत लोकप्रिय रहे। उन्होंने सदैव अपने दायित्वों का निर्वहन पूरी ईमानदारी एवं तत्परता के साथ किया तथा विभागीय कार्यों के प्रभावी संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

निगम में अपने सेवाकाल के दौरान दोनों अधिकारियों ने अपने उत्कृष्ट कार्य एवं समर्पण से संस्था की कार्यसंस्कृति को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी सेवाएं निगम परिवार के लिए सदैव प्रेरणास्रोत रहेंगी।

इस अवसर पर एनएसएफडीसी परिवार ने उनके दीर्घकालीन, समर्पित एवं मूल्यवान योगदान के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए उनके स्वस्थ, सुखमय, समृद्ध एवं आनंदमय जीवन की मंगलकामनाएं कीं। निगम परिवार को

विश्वास है कि वे अपने अनुभव, सकारात्मक दृष्टिकोण एवं जीवन मूल्यों से आगे भी समाज एवं परिवार के लिए प्रेरणा स्रोत बने रहेंगे।

iGOT कर्मयोगी पोर्टल पर अनिवार्य प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के सफल क्रियान्वयन हेतु वर्ष 2025–26 की वार्षिक योजना

केंद्र सरकार द्वारा अधिकारियों एवं कर्मचारियों की क्षमता निर्माण प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाने तथा उन्हें आधुनिक प्रशासनिक आवश्यकताओं के अनुरूप दक्ष बनाने के उद्देश्य से संचालित iGOT कर्मयोगी पोर्टल आज एक महत्वपूर्ण डिजिटल प्रशिक्षण मंच के रूप में स्थापित हो चुका है। इसी क्रम में, सरकारी दिशा–निर्देशों के अनुपालन तथा निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की व्यवहारिक, कार्यात्मक एवं कार्यक्षेत्र संबंधी दक्षताओं को और अधिक विकसित करने के उद्देश्य से कॉर्पोरेशन द्वारा सितंबर 2025 में वर्ष 2025–26 हेतु एक विस्तृत वार्षिक प्रशिक्षण योजना एवं प्रशिक्षण कैलेंडर जारी किया गया।

इस वार्षिक प्रशिक्षण कैलेंडर में विभिन्न स्तरों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए उनकी भूमिका एवं कार्यदायित्वों के अनुरूप अनिवार्य प्रशिक्षण पाठ्यक्रम निर्धारित किए गए। प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उद्देश्य केवल ज्ञानवृद्धि तक सीमित न होकर कर्मचारियों की कार्यकुशलता, निर्णय क्षमता, नेतृत्व कौशल, नैतिक मूल्यों तथा प्रशासनिक दक्षता को सुदृढ़ बनाना था, ताकि वे बदलते कार्य परिवेश में अधिक प्रभावी ढंग से अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन कर सकें।

प्रशिक्षण योजना के अंतर्गत iGOT कर्मयोगी पोर्टल पर अनेक महत्वपूर्ण एवं समसामयिक विषयों को सम्मिलित किया गया। इनमें अनुसूचित जातियों के कल्याण हेतु योजनाएं, नेतृत्व क्षमता विकास, व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक प्रभावशीलता, समस्या समाधान एवं निर्णय लेने की कला, कार्यालय प्रक्रियाएं, सूचना का अधिकार अधिनियम, प्रभावी संचार कौशल, नैतिक चिंतन, नोटिंग एवं ड्राफ्टिंग, योग एवं प्राणायाम, आचरण नियम, कर्मचारियों के लिए "क्या करें और क्या न करें", मूल्य एवं नैतिकता, चौट जीपीटी एवं जनरेटिव एआई उपकरणों का उपयोग, सरकारी ई–मार्केटप्लेस (GeM), भावात्मक बुद्धि तथा समय प्रबंधन जैसे विविध विषय शामिल थे।

इन पाठ्यक्रमों ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को न केवल प्रशासनिक प्रक्रियाओं की बेहतर समझ प्रदान की, बल्कि आधुनिक तकनीकी एवं डिजिटल उपकरणों के प्रभावी उपयोग के प्रति भी जागरूक किया। विशेष रूप से कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) एवं जनरेटिव एआई उपकरणों से संबंधित प्रशिक्षण ने कर्मचारियों को नई तकनीकों के प्रति अनुकूल बनने और कार्य निष्पादन में नवाचार अपनाने हेतु प्रेरित किया। वहीं नैतिकता, आचरण नियम एवं भावात्मक बुद्धि जैसे विषयों ने कार्यस्थल पर सकारात्मक एवं उत्तरदायी कार्यसंस्कृति को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

यह उल्लेखनीय है कि निगम के लगभग सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपने–अपने स्तर के लिए निर्धारित अनिवार्य प्रशिक्षण कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक पूर्ण किया। प्रशिक्षण कार्यक्रमों में उनकी सक्रिय सहभागिता एवं उत्साह यह दर्शाता है कि निगम में सतत् अधिगम (Continuous Learning) एवं क्षमता निर्माण की संस्कृति को गंभीरता से अपनाया जा रहा है। इन पाठ्यक्रमों से प्राप्त ज्ञान एवं कौशल ने कर्मचारियों की व्यवहारिक दक्षता, कार्य निष्पादन क्षमता तथा पेशेवर दृष्टिकोण को और अधिक सुदृढ़ बनाया।

कॉर्पोरेशन का यह प्रयास न केवल कर्मचारियों के व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ, बल्कि इससे संगठनात्मक कार्यक्षमता एवं सेवा गुणवत्ता में भी सकारात्मक वृद्धि देखने को मिली। भविष्य में भी निगम द्वारा अधिकारियों एवं कर्मचारियों के क्षमता निर्माण एवं कौशल विकास हेतु ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रमों को निरंतर प्रोत्साहित किए जाने का संकल्प व्यक्त किया गया है।

गतिविधियाँ – राजभाषा

श्री सुरेंद्र कुमार,
उप प्रबंधक, एनएसएफडीसी

जनवरी से मार्च, 2026 की तिमाही गतिविधियों, उपलब्धियों एवं रचनात्मक प्रयासों की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण एवं विविधताओं से परिपूर्ण रही। इस अवधि में निगम द्वारा अक्तूबर से दिसंबर 2025 तिमाही की गृह पत्रिका का सफलतापूर्वक प्रकाशन एवं विमोचन किया गया। गृह पत्रिका में निगम की विभिन्न गतिविधियों, उपलब्धियों, प्रशासनिक पहलों तथा कर्मचारियों की रचनात्मक अभिव्यक्तियों को प्रभावी रूप से स्थान दिया गया, जिसे अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा सराहना प्राप्त हुई।

इसी अवधि में एनएसएफडीसी के विभिन्न विभागों एवं डेस्कों से प्राप्त जनवरी से मार्च, 2026 तिमाही की प्रगति रिपोर्टों का विस्तृत परीक्षण एवं समीक्षा कार्य भी संपन्न किया गया। यह समीक्षा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2025–26 के प्रावधानों एवं निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप की गई। समीक्षा प्रक्रिया के माध्यम से विभागों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग, प्रगति एवं अनुपालन की स्थिति का आकलन किया गया तथा राजभाषा कार्यान्वयन को और अधिक प्रभावी बनाने हेतु आवश्यक सुझाव एवं दिशा–निर्देश प्रदान किए गए। इस प्रक्रिया ने निगम में राजभाषा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) की 62वीं बैठक में निगम की उल्लेखनीय सहभागिता एवं उपलब्धि

दिनांक 29 जनवरी, 2026 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) की 62वीं बैठक में एनएसएफडीसी की सक्रिय एवं प्रभावशाली सहभागिता रही। बैठक में निगम का प्रतिनिधित्व मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) एवं उप प्रबंधक द्वारा किया गया। इस अवसर पर राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार तथा सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रभावी प्रयोग को बढ़ावा देने से संबंधित विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर विचार–विमर्श किया गया।

बैठक के दौरान नराकास के तत्वावधान में आयोजित विभिन्न राजभाषा प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मानित भी किया गया। यह आयोजन न केवल हिंदी भाषा के प्रति अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक अभिरुचि को प्रोत्साहित करने वाला रहा, बल्कि कार्यालयी कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने की दिशा में भी प्रेरणादायक सिद्ध हुआ। निगम की सक्रिय भागीदारी एवं योगदान ने राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति उसकी प्रतिबद्ध ता को पुनः रेखांकित किया।

"नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), दिल्ली के तत्वावधान में एनएसएफडीसी द्वारा आयोजित 'राजभाषा प्रश्नमंच' प्रतियोगिता के सफल आयोजन के लिए आयोजक सम्मान ग्रहण करते हुए श्रीमती अर्चना मेहरा, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) एवं श्री सुरेन्द्र कुमर, उप प्रबंधक (राजभाषा)।"

नराकास की 62वीं बैठक में निगम का प्रतिनिधित्व करते मुख्य प्रबंधक (राभा), श्री सुरेंद्र कुमार, उप प्रबंधक और प्रतिभागी श्री महेश चन्द, सहायक प्रबंधक (परियोजना)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम-1) दिल्ली
(राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार)
सचिवालय : भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, निगमित मुख्यालय
राजीव गांधी भवन, सफदरजंग हवाई अड्डा, नई दिल्ली-110003

प्रशस्ति-पत्र

यह प्रशस्ति-पत्र नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम-1) दिल्ली के तत्वावधान में वर्ष 2025 के दौरान "राजभाषा प्रश्नमंच प्रतियोगिता (20.11.2025)" आयोजित करने के सम्मान स्वरूप आयोजक सदस्य उपक्रम "नेशनल शेड्यूल्ड कास्ट्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कार्पोरेशन (एन एस एफ डी सी)" को प्रदान कर सम्मानित किया जाता है।

(संजीव कुमार)
संयुक्त महाप्रबंधक (राजभाषा)
एवं सदस्य-सचिव, नराकास (उपक्रम-1)

(माया लवानिया)
कार्यपालक निदेशक (प्रशासन)

दिनांक :- 09.03.2026

'नराकास द्वारा सम्मान : राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान के लिए स्मृति चिह्न और प्रशस्ति पत्र से सम्मानित।

हमें यह बताते हुए अत्यंत हर्ष एवं गर्व का अनुभव हो रहा है कि निगम के श्री ललित फुलारा ने 'हिंदी टिप्पण' प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर अपनी उत्कृष्ट भाषाई दक्षता एवं राजभाषा हिंदी के प्रति गहरी प्रतिबद्धता का परिचय दिया। इसके अतिरिक्त श्री महेश चन्द ने अपने ज्ञान और कौशल से 'राजभाषा प्रश्नमंच' प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त कर निगम को गौरवान्वित किया।

दोनों अधिकारियों की यह उपलब्धि न केवल उनकी प्रतिभा, परिश्रम एवं हिंदी के प्रति समर्पण को दर्शाती है, बल्कि निगम में राजभाषा हिंदी के प्रभावी प्रयोग एवं प्रोत्साहन के प्रति सकारात्मक वातावरण को भी प्रतिबिंबित करती है। इस अवसर पर सभी विजेताओं को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) द्वारा स्मृति चिह्न एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। निगम परिवार ने दोनों अधिकारियों को उनकी इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रदान कीं।

'हिंदी टिप्पण' प्रतियोगिता'' में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर श्री ललित फुलारा की ओर से स्मृति चिह्न ग्रहण करते हुए श्री सुरेन्द्र कुमार।"

"'राजभाषा प्रश्नमंच' प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त करने पर महेश चन्द स्मृति चिह्न ग्रहण करते हुए।"

हिंदी कार्यशाला का सफल आयोजन

नेशनल शेड्यूल्ड कास्ट्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (एनएसएफडीसी) में दिनांक 16 मार्च 2026 को 'श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन : चुनौतियां एवं संभावनाएं' विषय पर एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रभावी प्रयोग को प्रोत्साहित करना, कर्मचारियों को राजभाषा नीति के प्रति जागरूक बनाना तथा बदलते प्रशासनिक एवं तकनीकी परिवेश में हिंदी के उपयोग की संभावनाओं पर सार्थक संवाद स्थापित करना था।

कार्यशाला में निगम के विभिन्न विभागों से कुल 36 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों ने राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित विविध विषयों पर गंभीरतापूर्वक चर्चा की तथा हिंदी के प्रभावी प्रयोग को लेकर अपने विचार एवं अनुभव साझा किए।

इस अवसर पर विशिष्ट वक्ता श्री रमेश चंद, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड, दिल्ली थे । उन्होंने अपने व्यापक अनुभवों एवं व्यावहारिक ज्ञान के आधार पर राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियों, प्रशासनिक स्तर पर भाषा संबंधी व्यावहारिक कठिनाइयों तथा आधुनिक तकनीकी साधनों के माध्यम से हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग की संभावनाओं पर विस्तृत एवं प्रेरणादायक मार्गदर्शन प्रदान किया। उन्होंने यह भी बताया कि वर्तमान डिजिटल युग में तकनीक का प्रभावी उपयोग कर राजभाषा कार्यान्वयन को और अधिक सरल, प्रभावशाली एवं व्यापक बनाया जा सकता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मुख्य महाप्रबंधक, श्री रमेश राव ने अपने संबोधन में कहा कि "राजभाषा का सफल कार्यान्वयन केवल संवैधानिक दायित्व नहीं है, बल्कि यह प्रशासनिक कार्यों में प्रभावी संचार एवं सुचारु कार्यप्रणाली का एक सशक्त माध्यम भी है। हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना संगठनात्मक दक्षता एवं समन्वय को सुदृढ़ करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। श्री रमेश चंद जी के अनुभव एवं मार्गदर्शन निश्चित रूप से हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की कार्यक्षमता को और अधिक समृद्ध करेंगे।"

कार्यशाला का यह सत्र अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक सिद्ध हुआ। प्रतिभागियों ने इसे उपयोगी बताते हुए कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम न केवल राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता बढ़ाते हैं, बल्कि कार्यस्थल पर हिंदी के प्रयोग के प्रति आत्मविश्वास एवं प्रतिबद्धता को भी सुदृढ़ करते हैं। कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतिभागियों ने राजभाषा हिंदी के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु अपने दायित्वों का अधिक सक्रियता एवं समर्पण के साथ निर्वहन करने का संकल्प व्यक्त किया।

ऐसी कार्यशालाएं न केवल कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रभावी प्रयोग के प्रति जागरूकता एवं आत्मविश्वास को सुदृढ़ करती हैं, बल्कि कार्यान्वयन से जुड़ी व्यावहारिक चुनौतियों के समाधान हेतु नए दृष्टिकोण एवं संभावनाओं के मार्ग भी प्रशस्त करती हैं।

तिमाही बैठक

"नेशनल शेड्यूल्ड कास्ट्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (एनएसएफडीसी)" में दिनांक 12 मार्च, 2026 को कार्यालय अध्यक्ष, अध्यक्ष– सह–प्रबंध निदेशक श्री प्रभात त्यागी की अध्यक्षता में जनवरी से मार्च 2026 की तिमाही बैठक का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस बैठक में निगम के प्रधान कार्यालय के सभी विभागों और वीसी के माध्यम संपर्क केंद्रों के सभी सदस्यों ने सक्रिय एवं उत्साहपूर्ण सहभागिता दर्ज कराई। बैठक के दौरान निगम में राजभाषा हिंदी के प्रयोग एवं कार्यान्वयन की वर्तमान स्थिति की विस्तृत समीक्षा की गई तथा आगामी कार्य योजनाओं एवं लक्ष्यों पर गंभीरतापूर्वक विचार–विमर्श किया गया।

बैठक में उपस्थित सदस्यों ने राजभाषा हिंदी के प्रभावी क्रियान्वयन को और अधिक सुदृढ़ बनाने हेतु अपने महत्वपूर्ण सुझाव एवं विचार साझा किए। चर्चा के दौरान कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने, कर्मचारियों में भाषाई जागरूकता विकसित करने तथा राजभाषा संबंधी गतिविधियों को अधिक प्रभावशाली बनाने पर विशेष बल दिया गया।

सदस्यों की पूर्ण उपस्थिति, सक्रिय सहभागिता एवं सकारात्मक विचार–विमर्श ने बैठक को अत्यंत सार्थक एवं परिणामोन्मुख बनाया। यह बैठक निगम में राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन तथा हिंदी के प्रगतिशील प्रयोग के प्रति संगठन की प्रतिबद्धता को प्रतिबिंबित करती है।

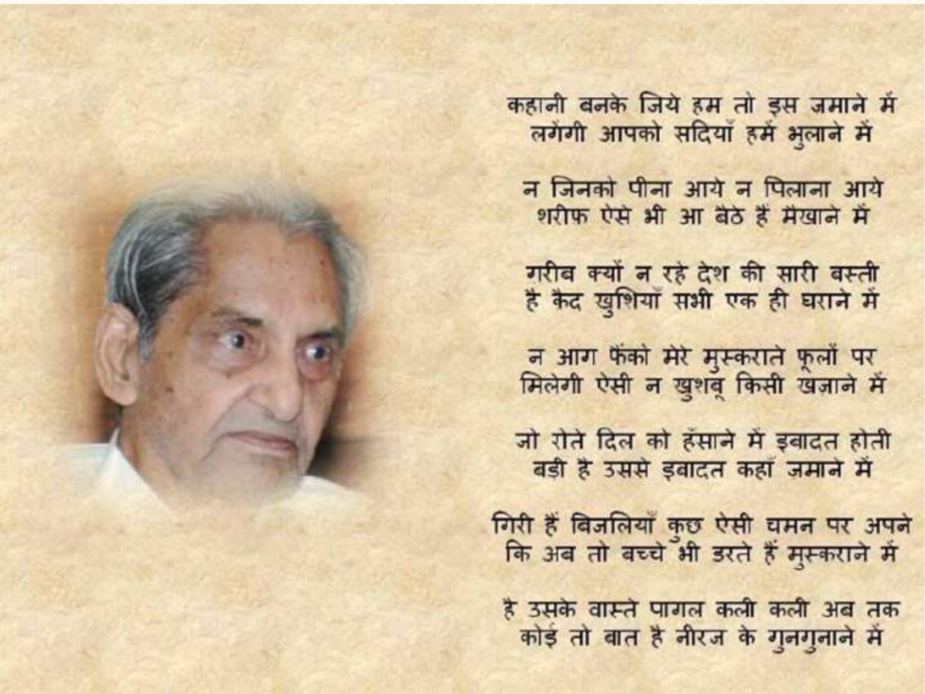

प्रशासनिक वाक्यांश

क्र.सं.	English Sentence	हिंदी वाक्यांश
1	It can be made more explicit by providing ways to dispose of the representation.	अभ्यावेदन के निपटान के तरीके प्रदान करके इसे और अधिक स्पष्ट किया जा सकता है।
2	Fees can be paid in advance through electronic mode.	शुल्क का भुगतान इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से अग्रिम रूप से किया जा सकता है।
3	Renewal fee has been reduced.	नवीनीकरण शुल्क कम कर दिया गया है।
4	It is made more explicit to ease in practice.	व्यवहारिक सुविधा के लिए इसे और अधिक स्पष्ट किया गया है।
5	Social media has enormous potential to reach people.	सोशल मीडिया में लोगों तक पहुँचने की अपार क्षमता है।
6	This agreement is in National Interest.	यह करार राष्ट्रीय हित में है।
7	This scheme is a Central Sector Scheme.	यह योजना केंद्रीय क्षेत्र योजना की योजना है।
8	Technical Evaluation and certification of the procured checkout systems are required.	खरीदी गई चेक–आऊट प्रणालियों के तकनीकी मूल्यांकन एवं प्रमाणन अपेक्षित है।
9	The proposal is submitted for perusal.	प्रस्ताव अवलोकनार्थ प्रस्तुत है।
10	Pending cases be disposed of early.	लंबित मामलों का शीघ्र निस्तारण किया जाए।
11	Note for Competent Authority is submitted for approval.	सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदनार्थ टिप्पणी प्रस्तुत है।
12	Please put up the file as modified.	कृपया यथासंशोधित फाइल प्रस्तुत करें।
13	We should have lenient approach in administrative matters.	हमें प्रशासनिक मामलों में उदार दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।
14	Delay may be explained.	विलम्ब का कारण बताया जाए।
15	Summary of the case may be put up.	इस मामले का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जाए।
16	Financial concurrence for the workshop may be obtained.	कार्यशाला के लिए वित्तीय सहमति प्राप्त की जाए।
17	Appropriate action may be taken as per rule.	नियमानुसार उपयुक्त कार्रवाई की जाए।
18	Expedite action in this matter is solicitated.	इस मामले में शीघ्र कार्रवाई की अपेक्षा है।
19	I agree with the above proposal.	मैं उपर्युक्त प्रस्ताव से सहमत हूँ।
20	Please find attached herewith a revised proposal incorporating the needful changes.	अपेक्षित संशोधनों को सम्मिलित करते हुए संशोधित प्रस्ताव संलग्न है।

पाँच पैसे का आरोप और चालीस वर्षों का संघर्ष

श्री देवानन्द
पूर्व मुख्य महाप्रबंधक, एनएसएफडीसी
के सौजन्य से

यह कहानी दिल्ली परिवहन निगम (क्ज्) के बस कंडक्टर रणवीर सिंह यादव की है, जिन्होंने अपने आत्मसम्मान और ईमानदारी की रक्षा के लिए जीवन के चार दशक अदालतों की चौखट पर गुजार दिए। मामला मात्र पाँच पैसे का था, लेकिन उसके परिणाम इतने गहरे थे कि उन्होंने एक व्यक्ति की पूरी जिंदगी बदल दी।

यह घटना वर्ष 1973 की है। दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) की बसों में रणवीर सिंह यादव नामक एक कंडक्टर कार्यरत थे। वे अपनी ईमानदारी और सरल स्वभाव के लिए जाने जाते थे। रोज की तरह टिकट काटना, यात्रियों से विनम्र व्यवहार करना और दिन के अंत में पूरा हिसाब जमा करनाकृयही उनकी सामान्य दिनचर्या थी।

लेकिन एक दिन उनकी जिंदगी ने ऐसा मोड़ लिया, जिसने आने वाले चार दशकों तक उनका पीछा नहीं छोड़ा। एक महिला यात्री ने आरोप लगाया कि 10 पैसे के टिकट के बदले उनसे 15 पैसे लिए गए और अतिरिक्त 5 पैसे कंडक्टर ने अपनी जेब में रख लिए। रकम भले ही छोटी थी, लेकिन आरोप बहुत बड़ा थाकृईमानदारी पर प्रश्नचिह्न।

रणवीर सिंह यादव ने स्वयं को निर्दोष बताया, पर विभागीय कार्रवाई शुरू हो गई। जांच बैठी, फाइलें चलीं और अंततः वर्ष 1976 में उन्हें नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया। एक झटके में उनकी रोजी–रोटी छिन गई। अचानक आय का साधन समाप्त हो गया और परिवार आर्थिक तथा मानसिक संकट में घिर गया।

कई लोगों ने उन्हें समझाया कि इतनी छोटी रकम के लिए लंबी लड़ाई लड़ना व्यर्थ है। लेकिन उनका जवाब अत्यंत मार्मिक थाकृ

"मैं पाँच पैसे के लिए नहीं, अपने चरित्र के लिए लड़ रहा हूँ।"

उनके लिए यह उनके चरित्र, आत्मसम्मान और सत्य की लड़ाई थी। इसी विश्वास के साथ उन्होंने न्यायालय का दरवाजा खटखटाया।

यहीं से शुरू हुई एक लंबी और थका देने वाली कानूनी लड़ाई। अदालतों की तारीखें, वकीलों की फीस, मानसिक तनाव और सामाजिक उपेक्षा धीरे–धीरे उनके जीवन का हिस्सा बन गए। समय बीतता गया। बच्चे बड़े हो गए, परिस्थितियाँ बदल गईं और संघर्ष करते–करते उनके बाल भी सफेद हो गए।

लगभग 17 वर्ष बाद, वर्ष 1990 में लेबर कोर्ट ने फैसला सुनाया कि रणवीर सिंह यादव निर्दोष हैं। ऐसा लगा

मानो सत्य की जीत हो गई हो। लेकिन यह जीत अंतिम नहीं थी। डीटीसी ने इस फैसले के खिलाफ हाई कोर्ट में अपील कर दी और मामला फिर वर्षों तक चलता रहा।

विडंबना यह रही कि जिस मामले की शुरुआत मात्र पाँच पैसे से हुई थी, उसमें सरकारी विभाग द्वारा लगभग 47,000 रुपये से अधिक खर्च कर दिए गए। अंततः वर्ष 2016 में, लगभग 43 वर्षों बाद, दिल्ली हाई कोर्ट ने डीटीसी की अपील खारिज कर दी। अदालत ने आदेश दिया कि रणवीर सिंह यादव को मुआवजा, ग्रेच्युटी और सीपीएफ की राशि प्रदान की जाए।

कानूनी दृष्टि से वे अंततः जीत गए थे, लेकिन प्रश्न यह है कि क्या चार दशक की पीड़ा, संघर्ष और सामा. जिक अपमान की भरपाई किसी आर्थिक मुआवजे से संभव है?

यह घटना केवल एक व्यक्ति की कहानी नहीं है, बल्कि हमारी न्याय व्यवस्था की धीमी गति और प्रशासनिक जटिलताओं का आईना भी है। आज देश की अदालतों में करोड़ों मुकदमे लंबित हैं। ऐसे में यह घटना कई गंभीर प्रश्न खड़े करती हैकृ

- क्या पाँच पैसे जैसे मामलों को दशकों तक अदालतों में घसीटना न्याय की भावना के अनुरूप है?
- क्या न्याय में अत्यधिक देरी आम नागरिक के विश्वास को कमजोर नहीं करती?
- क्या सरकारी संस्थाओं को अपील करने से पहले यह विचार नहीं करना चाहिए कि वे जनता के समय और धन का उपयोग किस प्रकार कर रही हैं?
- क्या त्वरित न्याय के लिए आवश्यक सुधार अब भी केवल वादों तक सीमित हैं?
- और सबसे महत्वपूर्ण प्रश्नकृक्या "देर से मिला न्याय" वास्तव में "अधूरा न्याय" बन जाता है?

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अंततः रणवीर सिंह यादव को न्याय तो मिला, लेकिन तब तक उनकी जिंदगी के सबसे महत्वपूर्ण और ऊर्जावान वर्ष बीत चुके थे। यही कारण है कि यह मामला आज भी लोगों को सोचने पर मजबूर करता है कि –

क्या बहुत देर से मिला न्याय वास्तव में पूरा न्याय कहलाता है?

न्याय केवल कानूनी निर्णय का नाम नहीं हैय उसमें उस व्यक्ति के जीवन, संघर्ष और बीते हुए समय का मूल्य भी शामिल होना चाहिए।

अस्वीकरण (Disclaimer):

यह लेख सार्वजनिक रूप से उपलब्ध स्रोतों, मीडिया रिपोर्टों एवं अभिलेखों के आधार पर तैयार किया गया है तथा इसका उद्देश्य केवल शैक्षिक, सामाजिक एवं प्रशासनिक विमर्श है। लेख में व्यक्त विचार लेखक के निजी एवं स्वतंत्र विचार हैंय इन्हें किसी न्यायिक निष्कर्ष अथवा संस्थाध्कार्यालय के आधिकारिक मत के रूप में न माना जाए। किसी तथ्यात्मक त्रुटि, अपूर्णता या अद्यतन की आवश्यकता होने पर उसे अनजाने में हुई त्रुटि माना जाएगा।

विश्व हिंदी दिवस : हिंदी के वैश्विक गौरव का उत्सव

श्री रजनीश बनकर,
उप महाप्रबंधक

विश्व हिंदी दिवस का इतिहास और उद्देश्य

प्रति वर्ष 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। विश्व हिंदी दिवस की शुरुआत वर्ष 2006 में भारत सरकार द्वारा की गई थी। यह दिन 10 जनवरी 1975 को नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन की स्मृति में मनाया जाता है।

इसका उद्देश्य हिंदी भाषा का वैश्विक प्रचार–प्रसार करना और इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक सशक्त भाषा के रूप में स्थापित करना है। यह दिवस हिंदी भाषा की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, उसकी व्यापक स्वीकार्यता और विश्वभर में बढ़ते प्रभाव का प्रतीक है। हिंदी केवल भारत की राजभाषा नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों की भावनाओं, संस्कृति और पहचान की भाषा भी है।

वर्ष 2026 की थीम –

"हिंदीः पारंपरिक ज्ञान से लेकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तक" – हिंदी की आधुनिक और तकनीकी उपयोगिता को दर्शाती है।

हिंदीः वैश्विक संवाद की सशक्त भाषा

प्रति वर्ष 10 जनवरी को हिंदी भाषा के वैश्विक प्रचार–प्रसार और इसे अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में स्था. पित करने के उद्देश्य से विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। यह दिन हिंदी भाषा के वैश्विक प्रसार, उसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उसकी बढ़ती स्वीकार्यता का प्रतीक है। हिंदी केवल भारत की राजभाषा ही नहीं, बल्कि विश्व के अनेक देशों में बोली, समझी और अपनाई जाने वाली प्रमुख भाषाओं में से एक बन चुकी है। इस दिवस का उद्देश्य हिंदी को अंतरराष्ट्रीय मंच पर स्थापित करना और इसके प्रति जागरूकता बढ़ाना है।

हिंदी की विशेषताएँ और सांस्कृतिक महत्व

हिंदी की सबसे बड़ी विशेषता इसकी सरलता, सहजता और लचीलेपन में निहित है। यह भाषा विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों को आत्मसात करने की क्षमता रखती है, जिसके कारण यह निरंतर विकसित होती रही है। हिंदी केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक पहचान, परंपराओं और मूल्यों का वाहक भी है। यह भाषा विभिन्न समुदायों को जोड़ने का कार्य करती है और सामाजिक समरसता को मजबूत बनाती है।

प्रधान मंत्री
Prime Minister

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि 10 जनवरी का दिन हर वर्ष विश्व हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर स्थापित करने के लिए यह एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है।

भाषा, अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम होने के साथ-साथ हमें समाज के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक तथा सामाजिक पहलुओं से भी परिचित करवाती है। विगत कुछ वर्षों से भारतीय प्रतिभा अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराने के लिए आगे आ चुकी है। विदेशी बाज़ार भी भारत की ओर आकृष्ट हो रहे हैं। ऐसे में हिन्दी भाषा का महत्त्व और भी बढ़ा है। हिन्दी ने वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान स्थापित कर ली है।

हिन्दी को एक सशक्त और समृद्ध भाषा बनाने में आप सब का सहयोग अपेक्षित है। सशक्त भाषा सशक्त राष्ट्र के निर्माण में योगदान दे सकती है। अप्रवासी भारतीय समुदाय और विदेश स्थित भारतीय मिशन हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सक्रिय और महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

(मनमोहन सिंह)

नई दिल्ली
16 दिसम्बर, 2008

वैश्वीकरण के दौर में हिंदी का विस्तार

आज वैश्वीकरण के दौर में जब दुनिया एक वैश्विक गांव में परिवर्तित हो रही है, हिंदी की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई है। विश्व के कई देशों: जैसे अमेरिका, कनाडा, मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम और दक्षिण अफ्रीका–में हिंदी बोलने और समझने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। प्रवासी भारतीय समुदाय ने हिंदी के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके अलावा, विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा का अध्ययन और शिक्षण भी बढ़ रहा है, जो इसकी वैश्विक स्वीकार्यता का प्रमाण है।

डिजिटल क्रांति और हिंदी का विकास

डिजिटल क्रांति ने हिंदी के विकास को नई दिशा दी है। इंटरनेट, सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स ने हिंदी को अभिव्यक्ति का एक व्यापक मंच प्रदान किया है। आज यूट्यूब, फेसबुक, ब्लॉग और समाचार पोर्टल्स पर हिंदी सामग्री की लोकप्रियता तेजी से बढ़ रही है। लोग अपनी मातृभाषा में जानकारी प्राप्त करना अधिक सहज और प्रभावी मानते हैं, जिसके कारण हिंदी का उपयोग निरंतर बढ़ रहा है।

तकनीकी प्रगति और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में हिंदी

तकनीकी प्रगति ने हिंदी के प्रयोग को और अधिक सुलभ बना दिया है। यूनिकोड के विकास ने हिंदी को डिजिटल दुनिया में स्थापित किया है, जिससे कंप्यूटर और मोबाइल पर हिंदी में कार्य करना आसान हो गया है। वॉइस टाइपिंग, स्पीच–टू–टेक्स्ट और मशीन अनुवाद जैसी तकनीकों ने हिंदी को आधुनिक कार्यक्षेत्र की भाषा बना दिया है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) आधारित उपकरणों ने भाषा की बाधाओं को कम किया है और हिंदी में संवाद को अधिक प्रभावी बनाया है।

प्रशासनिक और सामाजिक क्षेत्र में हिंदी की भूमिका

सरकारी और प्रशासनिक कार्यों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाना भी इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। जब सरकारी योजनाएं, सूचनाएं और सेवाएं हिंदी में उपलब्ध होती हैं, तो आमजन तक उनकी पहुंच अधिक प्रभावी हो जाती है। इससे न केवल पारदर्शिता बढ़ती है, बल्कि प्रशासन और जनता के बीच संवाद भी सुदृढ़ होता है।

नेशनल शेड्यूल्ड कास्ट्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (एनएसएफडीसी) जैसे संस्थान हिंदी के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। निगम द्वारा किए जा रहे प्रयासों से न केवल हिंदी में प्रशासनिक

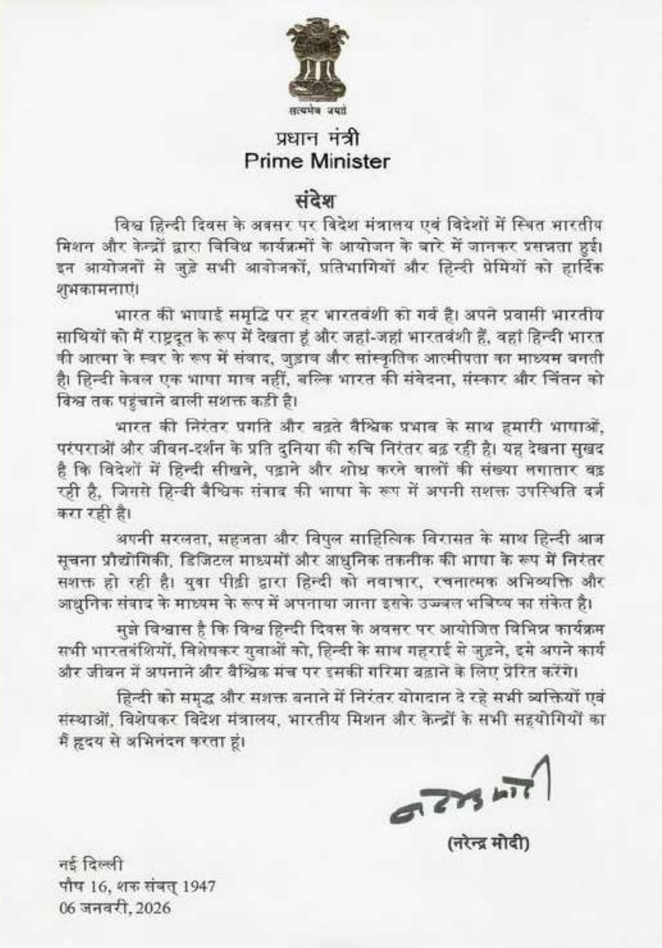

सत्यमेव जयते

प्रधान मंत्री
Prime Minister

संदेश

विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर विदेश मंत्रालय एवं विदेशों में स्थित भारतीय मिशन और केन्द्रों द्वारा विविध कार्यक्रमों के आयोजन के बारे में जानकर प्रसन्नता हुई। इन आयोजनों से जुड़े सभी आयोजकों, प्रतिभागियों और हिन्दी प्रेमियों को हार्दिक शुभकामनाएं।

भारत की भाषाई समृद्धि पर हर भारतवंशी को गर्व है। अपने प्रवासी भारतीय साथियों को मैं राष्ट्रदूत के रूप में देखता हूं और जहां-जहां भारतवंशी हैं, वहां हिन्दी भारत की आत्मा के स्वर के रूप में संवाद, जुड़ाव और सांस्कृतिक आत्मीयता का माध्यम बनती है। हिन्दी केवल एक भाषा मात्र नहीं, बल्कि भारत की संवेदना, संस्कार और चिंतन को विश्व तक पहुंचाने वाली सशक्त कड़ी है।

भारत की निरंतर प्रगति और बढ़ते वैश्विक प्रभाव के साथ हमारी भाषाओं, परंपराओं और जीवन-दर्शन के प्रति दुनिया की रुचि निरंतर बढ़ रही है। यह देखना सुखद है कि विदेशों में हिन्दी सीखने, पढ़ाने और शोध करने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है, जिससे हिन्दी वैश्विक संवाद की भाषा के रूप में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रही है।

अपनी सरलता, सहजता और विपुल साहित्यिक विरासत के साथ हिन्दी आज सूचना प्रौद्योगिकी, डिजिटल माध्यमों और आधुनिक तकनीक की भाषा के रूप में निरंतर सशक्त हो रही है। युवा पीढ़ी द्वारा हिन्दी को नवाचार, रचनात्मक अभिव्यक्ति और आधुनिक संवाद के माध्यम के रूप में अपनाया जाना इसके उज्ज्वल भविष्य का संकेत है।

मुझे विश्वास है कि विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित विभिन्न कार्यक्रम सभी भारतवंशियों, विशेषकर युवाओं को, हिन्दी के साथ गहराई से जुड़ने, इसे अपने कार्य और जीवन में अपनाने और वैश्विक मंच पर इसकी गरिमा बढ़ाने के लिए प्रेरित करेंगे।

हिन्दी को समृद्ध और सशक्त बनाने में निरंतर योगदान दे रहे सभी व्यक्तियों एवं संस्थाओं, विशेषकर विदेश मंत्रालय, भारतीय मिशन और केन्द्रों के सभी सहयोगियों का मैं हृदय से अभिनंदन करता हूं।

(नरेन्द्र मोदी)

नई दिल्ली
पौष 16, शक संवत् 1947
06 जनवरी, 2026

कार्यों को बढ़ावा मिल रहा है, बल्कि लाभार्थियों तक योजनाओं की जानकारी उनकी अपनी भाषा में पहुँच रही है। इससे सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण को भी बल मिलता है।

हिंदी के समक्ष चुनौतियाँ, समाधान और भविष्य की संभावनाएँ

हालांकि हिंदी के सामने कुछ चुनौतियाँ भी हैं। तकनीकी शब्दावली की कमी, अंग्रेजी के बढ़ते प्रभाव और कुछ क्षेत्रों में हिंदी के प्रयोग को लेकर झिझक जैसी समस्याएं अभी भी मौजूद हैं। कई बार औपचारिक और तकनीकी कार्यों में अंग्रेजी को प्राथमिकता दी जाती है, जिससे हिंदी का उपयोग सीमित रह जाता है। इसके अलावा, डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर हिंदी के मानकीकरण और एकरूपता की आवश्यकता भी महसूस की जाती है।

इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए आवश्यक है कि हिंदी को सरल, व्यवहारिक और तकनीकी रूप से सक्षम बनाया जाए। शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से लोगों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। साथ ही, तकनीकी शब्दावली के विकास और उसके मानकीकरण पर भी विशेष ध्यान देना आवश्यक है।

निष्कर्ष

विश्व हिंदी दिवस हमें यह संकल्प लेने का अवसर देता है कि हम हिंदी को केवल औपचारिक भाषा के रूप में नहीं, बल्कि अपने दैनिक जीवन और कार्यों का अभिन्न हिस्सा बनाएं। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हिंदी का प्रयोग सरल, स्पष्ट और प्रभावी हो, ताकि यह अधिक से अधिक लोगों तक पहुँच सके।

हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है। यदि हम इसके विकास के लिए निरंतर प्रयास करते रहें, तो यह न केवल भारत में, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी एक सशक्त और प्रभावी भाषा के रूप में स्थापित हो सकती है। यह भाषा हमें एकता, संस्कृति और संवाद की नई दिशा प्रदान करती है।

अंततः, हिंदी केवल शब्दों का संग्रह नहीं, बल्कि हमारी पहचान, हमारी संस्कृति और हमारी आत्मा का प्रतिबिंब है। इसके संवर्धन और प्रसार में हम सभी की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। आइए, विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर हम यह संकल्प लें कि हिंदी को अपनाकर हम इसे नई ऊंचाइयों तक पहुंचाएंगे और इसे वैश्विक संवाद की सशक्त भाषा बनाएंगे।

हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है,
जिनके बल पर वह विश्व की
साहित्यिक भाषा की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है।

– मैथिलीशरण गुप्त

हिंदी साहित्यिक जगत को समृद्ध करतीं प्रमुख महिला साहित्यकार और उनकी विशेषताएँ

श्रीमती पूनम सुभाष
पूर्व मुख्य राजभाषा अधीक्षक
एचपीसीएल

हिंदी साहित्य ने भारत की साहित्यिक विरासत को सदैव विकसित और समृद्ध किया है। इनमें भी विशेष रूप से पितृसत्तात्मक समाज में अपनी सशक्त कलम से महिला साहित्यकारों ने न सिर्फ अपनी एक जगह बनाई, बल्कि हिंदी साहित्य को और समृद्ध किया। आइए जानते हैं कुछ ऐसी महिला हिंदी साहित्यकारों के बारे में।

महादेवी वर्मा
(26 मार्च, 1907 से 11 सितंबर, 1987)

महादेवी वर्मा, जिन्हें "आधुनिक युग की मीरा" के नाम से जाना जाता है, हिंदी साहित्य के छायावादी युग की एक सशक्त हस्ताक्षर, प्रख्यात कवयित्री और लेखिका थीं। उनकी प्रसिद्ध कविता "मैं नीर भरी दुख की बदली" उनकी संवेदनशील और करुणा–प्रधान काव्यधारा का उत्कृष्ट उदाहरण है। उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रकृति, स्त्री जीवन और मानवीय वेदना को अत्यंत मार्मिक ढंग से पिरोया, जिसका प्रमाण 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा' और 'दीपशिखा' जैसे काव्य संग्रहों में मिलता है। फर्रुखाबाद (इलाहाबाद के समीप) में जन्मी महादेवी वर्मा को हिंदी और संस्कृत के अध्ययन की प्रेरणा उनकी माता से मिली। कॉलेज जीवन में वे गुप्त रूप से छंद लिखती थीं, जहाँ उनकी सहपाठी और प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने उनकी प्रतिभा को पहचानकर उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। छायावाद आंदोलन की अग्रणी रचनाकार के रूप में उन्होंने आधुनिक हिंदी कविता में भावनात्मक गहराई और रूमानी संवेदना का नया आयाम जोड़ा। वे केवल कवयित्री ही नहीं, बल्कि महिला अधिकार कार्यकर्ता, स्वतंत्रता सेनानी और शिक्षाविद भी थीं। 'चाँद' पत्रिका का संपादन करते हुए उन्होंने हिंदी साहित्य में महिलाओं को

25

विशेष प्रोत्साहन दिया। उनकी गद्य कृतियाँ 'श्रृंखला की कड़ियाँ' और 'मेरे बचपन के दिन' जहां जीवन के अनुभवों को जीवंत करती हैं, वहीं 'नीलकंठ' और 'गौरा' जैसी रचनाएँ पशु–प्रेम और संवेदनशीलता को दर्शाती हैं। 'यामा', 'अग्निरेखा', 'रेखाएँ' और 'पथ के साथी' उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। उनके अद्वितीय साहित्यिक योगदान के लिए उन्हें 1982 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया, और वे आज भी हिंदी साहित्य में प्रेरणा का अमिट स्रोत बनी हुई हैं।

कृष्णा सोबती
(18.02.1925 – 25 जनवरी 2019)

कृष्णा सोबती हिंदी साहित्य की एक विशिष्ट, साहसिक और प्रयोगधर्मी लेखिका थीं, जिन्होंने अपनी नई लेखन शैली और सशक्त अभिव्यक्ति के माध्यम से हिंदी गद्य को समृद्ध किया। पाकिस्तान के गुजरात (अब पाकिस्तान) में जन्मी कृष्णा सोबती के लेखन पर हिंदी, उर्दू और पंजाबी भाषाओं का गहरा प्रभाव दिखाई देता है, जिससे उनकी भाषा जीवंत, बहुरंगी और प्रभावशाली बनती है। उनके साहसी लेखन में स्त्री मन की जिजीविषा, विभाजन का दर्द और पंजाबी संस्कृति की झलक प्रमुख थी। उनकी रचनाओं में मजबूत, स्वतंत्र और जटिल स्त्री पात्रों का निर्माण विशेष रूप से उल्लेखनीय है। अपनी साहसिक शैली और मजबूत चरित्रों के लिए जानी जाती हैं, जिन्होंने पारंपरिक मानदंडों पर सवाल उठाए (जैसे 'जिंदगीनामा')।

अपनी शुरुआती कृतियों में उन्होंने भारत–पाक विभाजन, स्त्री–पुरुष संबंधों, बदलते सामाजिक परिवेश और मानवीय मूल्यों के ह्रास को संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया, वहीं बाद की रचनाओं में उन्होंने महिला पहचान, मनोवैज्ञानिक द्वंद्व और कामुकता जैसे जटिल एवं वर्जित विषयों को साहसपूर्वक उठाया। उनका प्रसिद्ध उपन्यास 'मित्रो मरजानी' एक विवाहित स्त्री की इच्छाओं और उसकी कामुकता की निर्भीक अभिव्यक्ति के लिए जाना जाता है, जबकि सूरजमुखी अँधेरे के में उन्होंने बचपन में यौन हिंसा की शिकार हुई स्त्री के मानसिक आघात और संघर्ष को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। इसके अतिरिक्त 'जिंदगीनामा', 'डार से बिछुड़ी' और 'बादलों के घेरे में' जैसी कृतियाँ उनके साहित्यिक वैभव को और समृद्ध करती हैं। वर्ष 2017 में उनकी आत्मकथा 'गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिन्दुस्तान' का प्रकाशन हुआ, जो उनके जीवन और समय का महत्वपूर्ण दस्तावेज है। उसी वर्ष उन्हें हिंदी साहित्य में उनके अमूल्य योगदान के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कृष्णा सोबती का लेखन आज भी अपनी निर्भीकता, संवेदनशीलता और यथार्थवादी दृष्टि के कारण पाठकों को गहराई से प्रभावित करता है।

> **बेटी के पैदा होते ही**
> **माँ सदाजीवी हो जाती है।**
> **वह कभी नहीं मरती।**
> **हो उठती है वह निरंतरा।**
> वह आज है, कल भी रहेगी। माँ से बेटी तक।
> बेटी से उसकी बेटी, उसकी बेटी से भी अगली बेटी।
> अगली से भी अगली। वही सृष्टि का स्रोत है।
>
> **- कृष्णा सोबती।**

शिवानी
(17.10.1923 – 21.03.2003)

शिवानी (वास्तविक नामः गौरा पंत) हिंदी साहित्य की एक अत्यंत लोकप्रिय और सशक्त कथाकार थीं। उनका जन्म एक कुमाऊँनी ब्राह्मण परिवार में हुआ था। वे अपने उपनाम "शिवानी" से ही साहित्य जगत में प्रसिद्ध हुईं। उनकी रचनाओं में कुमाऊँ और हिमालयी जीवन की सजीव झलक मिलती है। उन्होंने प्रकृति,

संस्कृति और मानवीय भावनाओं का सुंदर चित्रण किया। उनकी लेखन शैली सरल, प्रवाहपूर्ण और अत्यंत आकर्षक है। वे विशेष रूप से महिला केंद्रित कहानियों के लिए जानी जाती हैं। उनकी रचनाओं में नारी के संघर्ष, आत्मसम्मान और संवेदनाओं का गहरा चित्रण मिलता है। उन्होंने अपने उपन्यासों में महिलाओं के जीवन संघर्ष और भावनाओं को प्रमुखता से दिखाया। उन्होंने परंपरागत पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं की स्थिति पर प्रश्न उठाए। उनका उपन्यास 'चौदह फेरे' सामाजिक बंधनों और नारी जीवन की जटिलताओं को दर्शाता है। इसमें नायिका अहिल्या के माध्यम से स्त्री की पीड़ा और संघर्ष को प्रस्तुत किया गया है। उनकी कृतियों में मानवीय संवेदनाओं और मानवतावाद का विशेष स्थान है। उन्होंने साधारण पात्रों को भी असाधारण गहराई के साथ चित्रित किया। उनकी रचनाओं में पारंपरिक परिवार, समाज और रिश्तों की झलक मिलती है।

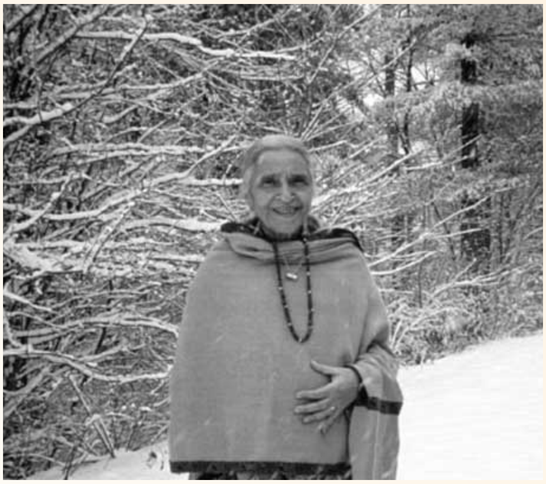

अम्मा ने ठीक ही कहा था। ऐसे उस अनजान शहर में किसी से कुछ पूछे, बस एक पत्र का सूत्र पकड़ चले आना एक बचपना मात्र था।'

– 'चल खुसरो घर अपने, शिवानी'

उनकी प्रसिद्ध कृतियों में 'कृष्णकली', 'अतिथि', 'लाल हवेली', 'कलि कथा', 'सुरंगमा', 'रतिविलास', 'विष कन्या', और 'अमादेर शांतिनिकेतन' (संस्मरण) शामिल हैं। उनकी भाषा में भावनात्मक गहराई और सहजता का सुंदर संतुलन है। उन्होंने हिंदी कथा साहित्य को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। उनकी रचनाएँ पाठकों को भावनात्मक रूप से जोड़ती हैं। उन्हें साहित्य में योगदान के लिए 1982 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। शिवानी आज भी हिंदी साहित्य में एक प्रेरणास्रोत के रूप में याद की जाती हैं।

मन्नू भंडारी
(03.04.1931 – 15.11.2021)

हिंदी साहित्य की प्रमुख हिंदी तथा सम्मानित लेखिकाओं में अगला नाम आता है संवाद लेखिका और कहानीकार मन्नू भंडारी का। अपने दो उपन्यासों, आपका बंटी और महाभोज के साथ वे अपने पाठकों के अवचेतन मन पर आज भी छाई हैं। अपनी सभी रचनाओं के माध्यम से मन्नू भंडारी ने परिवार और समाज में महिलाओं की स्थिति को सदैव एक अलग आयाम देने की कोशिश की। उदाहरण स्वरूप एक कमजोर लड़की की नायिका जहाँ परंपरा के नाम पर अपने माता–पिता द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों के कारण अपने साहसी विचारों को अंजाम नहीं दे पाती, वहीं 'त्रिशंकु' की नायिका सामाजिक नैतिक मूल्यों और आधुनिकता के बीच संतुलन

'गलती इसने की है तो सजा भी इसे दीजिये न, इसे यहाँ से भेजकर तो आप मुझे सजा दे रहीं है।'

– 'स्वामी' मन्नू भंडारी

बनाने में कामयाब हो जाती है। अपनी अधिकतर कहानियों के माध्यम से उन्होंने भेदभाव पूर्ण सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों, दृष्टिकोणों और प्रथाओं पर प्रकाश डाला है, जो महिलाओं के व्यक्तित्व को कमजोर बनाते हैं। इसी के मद्देनजर आपका बंटी में उन्होंने भारतीय समाज में एक तलाकशुदा महिला द्वारा झेले जा रहे सामजिक कलंकों पर प्रकाश डाला है। गौरतलब है कि उनकी कृति 'यही सच है' पर हिंदी फिल्म रजनीगंधा बनाई गई थी, जिसने वर्ष 1974 में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार जीता था। इसके अलावा उन्होंने वर्ष 1977 में 'स्वामी' और वर्ष 1986 में 'समय की धारा' नामक फिल्मों के लिए संवाद भी लिखे थे।

मन्नू भंडारी हिंदी साहित्य की प्रमुख और सम्मानित लेखिकाओं में से एक थीं। वे नई कहानी आंदोलन की महत्वपूर्ण रचनाकार मानी जाती हैं। उनकी लेखन शैली सरल, सहज और अत्यंत प्रभावशाली है। उन्होंने अपने साहित्य में मध्यवर्गीय जीवन की जटिलताओं को उकेरा। उनकी रचनाओं का केंद्र मुख्यतः परिवार और समाज में महिला की स्थिति रही। वे स्त्री–मन की सूक्ष्म संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने में पारंगत थीं। उनका प्रसिद्ध उपन्यास 'आपका बंटी' आज भी अत्यंत लोकप्रिय है। इसमें तलाक और पारिवारिक विघटन का मार्मिक चित्रण मिलता है। उनका दूसरा चर्चित उपन्यास 'महाभोज' राजनीतिक और सामाजिक यथार्थ को उजागर करता है। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों और भेदभावपूर्ण मान्यताओं पर प्रहार किया। उनकी कहानी 'यही सच है' पर फिल्म 'रजनीगंधा' बनी, जिसे सराहना मिली, जिसने वर्ष 1974 में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार जीता था। इसके अलावा उन्होंने वर्ष 1977 में स्वामी और वर्ष 1986 में समय की 'धारा' नामक फिल्मों के लिए संवाद भी लिखे थे।

उनकी कहानियों में यथार्थवाद और संवेदनशीलता का सुंदर समन्वय मिलता है। वे समाज में महिला की स्वतंत्र पहचान की पक्षधर थीं। उनकी रचनाएँ पाठकों को सोचने के लिए प्रेरित करती हैं। उन्होंने साहित्य के माध्यम से सामाजिक बदलाव का प्रयास किया। उनका लेखन आज भी प्रासंगिक और जीवंत है। उन्हें हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान के लिए सम्मानित किया गया। मन्नू भंडारी हिंदी कथा साहित्य की सशक्त आवाज के रूप में सदैव याद की जाएंगी।

> "दुःख मत करना,"उसने कहा,"शायद कोई भी इन्सान एक ही समय में एक दूसरे को प्यार नहीं करते. .. जब एक करता है तो दूसरा नहीं और जब दूसरा करता है.... देरी मुझसे हुई, मनु!"
>
> – चित्तकोबरा, मृदुला गर्ग

मृदुला गर्ग
(25.10.1938)

मृदुला गर्ग हिंदी साहित्य की एक प्रमुख और बहुआयामी लेखिका हैं। उनका जन्म कोलकाता में हुआ था। वे उपन्यास, कहानी, नाटक और निबंधकृसभी विधाओं में सक्रिय रहीं। उन्होंने 20 से अधिक पुस्तकों की रचना कर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। उन्होंने अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर करने के बाद दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन भी किया। उनकी लेखन शैली में नवीनता, विविधता और गहराई का विशेष स्थान है। वे अपने साह. सिक और विचारोत्तेजक विषयों के लिए जानी जाती हैं।

उनका चर्चित उपन्यास 'चितकोबरा' विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसमें उन्होंने स्त्री–पुरुष संबंधों को नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया। शरीर को मन के समांतर खड़ा किया, बल्कि इस पर पुरुष प्रधानता विरोधी दृष्टिकोण भी रखे। उन्होंने शरीर और मन के संबंध को समान महत्व देते हुए पुरुष प्रधानता को चुनौती दी। उनका लेखन कई बार विवादों में भी

रहा, परंतु उसकी प्रासंगिकता बनी रही। वे तीखे व्यंग्य लेखन के लिए भी प्रसिद्ध हैं। उनका 'कटाक्ष' स्तंभ (इंडिया टुडे) उनकी पैनी दृष्टि का प्रमाण है। उनकी कृतियों में उसके हिस्से की 'धूप', 'वंशज', 'चितकोबरा', 'अनित्य', 'मैं' और 'मैं', 'कठगुलाब', 'मिल–जुल मन', 'वसु का कुटुम', 'कितनी कैदें, 'टुकड़ा–टुकड़ा आदमी', 'डैफोडिल जल रहे हैं', 'ग्लेशियर से', 'उर्फ सैम', 'शहर के नाम','समागम', 'मेरे देश की मिट्टी अहा', 'संगति–विसंगति', 'जूते का जोड़ गोभी का तोड़', 'एक और अजनबी', 'जादू का कालीन', 'तीन कैदें', 'साम दाम दंड भेद', 'रंग–ढंग', 'चूकते नहीं सवाल', 'कृति और कृतिकार', 'कुछ अटके कुछ भटके', 'कर लेंगे सब हजम' 'तथा खेद नहीं है' प्रमुख हैं। उन्होंने समाज, व्यक्ति और संबंधों की जटिलताओं को गहराई से उकेरा। उनकी भाषा में बौद्धिकता और संवेदनशीलता का सुंदर संतुलन है। वे महिला सशक्तिकरण और सामाजिक मुद्दों पर मुखर रहीं। वे पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक कार्यों से भी जुड़ी रहीं। उनकी रचनाएँ पाठकों को सोचने और प्रश्न करने के लिए प्रेरित करती हैं। मृदुला गर्ग हिंदी साहित्य में एक सशक्त और निर्भीक आवाज के रूप में स्थापित हैं।

उषा प्रियंवदा
(24.12.1930)

उषा प्रियंवदा हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण और संवेदनशील कथाकार हैं। उनका नाम आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में विशेष स्थान रखता है। अंग्रेजी साहित्य से जुड़ी होने के बावजूद उन्होंने हिंदी में उत्कृष्ट लेखन किया। उनकी रचनाओं ने हिंदी साहित्य को समृद्ध और व्यापक बनाया। उनकी कहानियों में आधुनिक जीवन की ऊब और अकेलेपन का चित्रण मिलता है। वे मानवीय संवेदनाओं को अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करती हैं। उनकी नायिकाएँ आत्म. निर्भर और विचारशील होती हैं। वे आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन को दर्शाती हैं। उनकी रचनाओं में स्त्री–मन की गहराई का सजीव चित्रण मिलता है। वे समाज की बदलती परिस्थितियों को बारीकी से समझती हैं। उनकी भाषा सरल, सहज और प्रभावशाली है। उनकी प्रमुख कृति 'पचपन खंभे लाल दीवारें' अत्यंत प्रसिद्ध है। इसमें अकेलेपन और भावनात्मक संघर्ष का चित्रण है। उनकी अन्य कृतियों में 'जिंदगी और गुलाब के फूल' शामिल है। 'रुकोगी नहीं राधिका' में नारी के आत्मसम्मान को दर्शाया गया है। 'एक कोई दूसरा', 'लाल दीवारें', 'शेष यात्रा' और 'अंतर्वंशी' भी उनकी चर्चित रचनाएँ हैं। उनकी कहानियाँ यथार्थवादी दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती हैं। वे पाठकों को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करती हैं। उनका लेखन भावनात्मक और बौद्धिक दोनों स्तरों पर प्रभाव डालता है। उषा प्रियंवदा हिंदी साहित्य की एक सशक्त और प्रेरणादायक लेखिका हैं।

चित्रा मुद्गल
(10.12.1943)

चित्रा मुद्गल आधुनिक हिंदी साहित्य की एक बहुचर्चित, संवेदनशील और प्रतिबद्ध लेखिका हैं। उन्होंने अपने लेखन में समाज के यथार्थ को गहराई से उकेरा है। वे विशेष रूप से श्रमिक, निम्न वर्ग और दलित जीवन के चित्रण के लिए जानी जाती हैं। उनकी रचनाओं में मानवीय संवेदनाओं का सशक्त स्वर मिलता है। उन्होंने आधुनिक जीवन की जटिलताओं और संघर्षों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। उनके पात्र आमतौर पर साधारण वर्ग से आते हैं, जो जीवन की कठिनाइयों से जूझते हैं। उनकी कहानियों में सामाजिक अन्याय और शोषण के विरुद्ध आवाज दिखाई देती है। वे दलित और वंचित वर्ग को साहित्य के केंद्र में लाने वाली लेखिका हैं। उनकी प्रमुख कृति 'आँवा' अत्यंत

चर्चित और प्रभावशाली उपन्यास है। इस उपन्यास के लिए उन्हें 2003 में व्यास सम्मान प्राप्त हुआ। 'आंवा' का कई भाषाओं में अनुवाद भी किया गया है। उनकी अन्य कृतियों में 'एक जमीन अपनी', 'गिलिगडु', 'लाक्षागृह' और 'जिनावर' शामिल हैं। उन्होंने कहानी, उपन्यास, बाल साहित्य और संपादनकृसभी क्षेत्रों में योगदान दिया। उनके कई कहानी संग्रह और बाल साहित्य की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनकी लेखन शैली यथार्थवादी और प्रभावशाली है। वे समाज के कमजोर वर्गों की पीड़ा को संवेदनशीलता से प्रस्तुत करती हैं। उन्हें इंदु कथा सम्मान और हिंदी अकादमी पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। उनका साहित्य सामाजिक जागरूकता और परिवर्तन का माध्यम है। चित्रा मुद्गल हिंदी साहित्य में एक सशक्त और जनपक्षधर आवाज के रूप में जानी जाती हैं।

ममता कालिया
(02.11.1940)

ममता कालिया आधुनिक हिंदी साहित्य की एक प्रमुख, बहुमुखी और सशक्त लेखिका हैं। उन्होंने नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध, कविता और पत्रकारिताकृलगभग सभी विधाओं में लेखन किया है। अपने लेखन जीवन में उन्होंने 200 से अधिक कहानियों की रचना की है। उनकी रचनाएँ मध्यवर्गीय जीवन की सच्चाइयों को उजागर करती हैं। वे विशेष रूप से स्त्री जीवन और उसकी जटिलताओं को प्रस्तुत करने के लिए जानी जाती हैं। उनकी भाषा सरल, व्यंग्यपूर्ण और बेहद प्रभावशाली होती है। वे समाज की विसंगतियों और ढोंग पर तीखा प्रहार करती हैं। उनकी रचनाओं में यथार्थवाद और समकालीनता का स्पष्ट चित्रण मिलता है। वे स्त्री की स्वतंत्र पहचान और आत्मसम्मान की पक्षधर हैं। उनकी प्रसिद्ध कृतियों में 'एक अदद औरत' विशेष रूप से चर्चित है। 'सीट नंबर 6' और 'पच्चीस साल की लड़की' में सामाजिक यथार्थ झलकता है। 'बेघर' और 'नरक दर नरक' में जीवन की कठिनाइयों का चित्रण है। 'एक पत्नी के नोट्स' में वैवाहिक जीवन की सच्चाइयाँ सामने आती हैं। 'दौड़' और 'कल्चर–वल्चर' में आधुनिक जीवन की विडंबनाएँ दिखती हैं। वे वर्तमान में हिंदी जगत से जुड़ी संपादकीय जिम्मेदारियाँ भी निभा रही हैं। उनका लेखन समकालीन समाज का आईना है। वे पाठकों को सोचने और प्रश्न करने के लिए प्रेरित करती हैं। उनकी शैली में सहजता के साथ तीक्ष्णता का सुंदर समन्वय है। ममता कालिया का साहित्य आज भी प्रासंगिक और प्रभावशाली बना हुआ है। वे हिंदी साहित्य में एक सशक्त और निर्भीक आवाज के रूप में स्थापित हैं।

डिजिटल युग में हिंदीः अवसर और चुनौतियाँ

श्री वरूण शर्मा,
सहायक महाप्रबंधक

भूमिका

डिजिटल युग ने मानव जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित किया हैकृचाहे वह संचार हो, शिक्षा, प्रशासन या व्यापार। इंटरनेट, स्मार्टफोन, सोशल मीडिया और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (।ए) जैसे साधनों ने दुनिया को एक वैश्विक मंच में परिवर्तित कर दिया है। इस परिवर्तन के बीच हिंदी भाषा भी तेजी से विकसित हो रही है। जो हिंदी कभी पारंपरिक माध्यमों तक सीमित मानी जाती थी, आज वही डिजिटल दुनिया में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रही है।

हिंदी का बढ़ता डिजिटल विस्तार

हिंदी विश्व की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। भारत के साथ—साथ विदेशों में भी हिंदी समझने और बोलने वालों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिंदी सामग्री की मांग में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। यूट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम, ब्लॉग और समाचार वेबसाइटों पर हिंदी कंटेंट तेजी से लोकप्रिय हो रहा है।

लोग अपनी मातृभाषा में जानकारी प्राप्त करना अधिक सहज और प्रभावी मानते हैं। यही कारण है कि सरकारी और निजी दोनों क्षेत्र हिंदी में डिजिटल सामग्री को बढ़ावा दे रहे हैं। आज छोटे व्यवसाय से लेकर बड़े संस्थान तक, सभी हिंदी के माध्यम से व्यापक दर्शकों तक पहुंच बनाने का प्रयास कर रहे हैं।

तकनीकी प्रगति और हिंदी की सशक्तता

डिजिटल तकनीक ने हिंदी को नई पहचान दी है। यूनिकोड के आगमन ने हिंदी को वैश्विक डिजिटल प्लेटफॉर्म पर स्थापित किया है। अब हिंदी में टाइपिंग, ई—मेल, वेबसाइट निर्माण और दस्तावेज तैयार करना बेहद सरल हो गया है। वॉइस टाइपिंग, स्पीच—टू—टेक्स्ट और टेक्स्ट—टू—स्पीच जैसी तकनीकों ने हिंदी के उपयोग को और भी आसान बना दिया है। विशेष रूप से उन लोगों के लिए, जो पारंपरिक टाइपिंग में दक्ष नहीं हैं, यह तकनीक एक वरदान साबित हुई है। इसके अतिरिक्त, विभिन्न मोबाइल एप्स और सॉफ्टवेयर हिंदी में काम करने की सुविधा प्रदान कर रहे हैं, जिससे यह भाषा डिजिटल कार्य संस्कृति का हिस्सा बनती जा रही है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की भूमिका

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने हिंदी के विकास को नई दिशा दी है। मशीन अनुवाद, चौटबॉट्स, वॉइस असिस्टेंट्स और भाषा पहचान तकनीकों ने हिंदी के उपयोग को व्यापक बनाया है। आज कई प्लेटफॉर्म हिंदी में स्वतः अनुवाद, प्रश्नोत्तर और संवाद की सुविधा प्रदान कर रहे हैं। ।ए आधारित टूल्स ने भाषा की बाधाओं को काफी हद तक कम कर दिया है। इससे हिंदी उपयोगकर्ताओं को वैश्विक जानकारी तक अपनी भाषा में पहुंचने का अवसर मिल रहा है।

ई–गवर्नेंस में हिंदी का महत्व

ई–गवर्नेंस के क्षेत्र में हिंदी का उपयोग नागरिकों तक सेवाओं की पहुंच को आसान बनाता है। जब सरकारी योजनाएं, पोर्टल और सूचनाएं हिंदी में उपलब्ध होती हैं, तो आमजन उन्हें बेहतर ढंग से समझ पाते हैं। इससे पारदर्शिता और उत्तरदायित्व दोनों में वृद्धि होती है। सरकारी कार्यालयों में ई–ऑफिस, डिजिटल फाइलिंग और ऑनलाइन सेवाओं में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना समय की आवश्यकता है। इससे प्रशासन अधिक जनोन्मुख और प्रभावी बनता है।

मुख्य चुनौतियाँ

हालांकि डिजिटल युग में हिंदी के सामने कई अवसर हैं, लेकिन कुछ चुनौतियाँ भी मौजूद हैं। सबसे बड़ी चुनौती तकनीकी शब्दावली की कमी है। कई बार अंग्रेजी शब्दों के उपयुक्त और प्रचलित हिंदी विकल्प उपलब्ध नहीं होते, जिससे उपयोगकर्ताओं को कठिनाई होती है। इसके अलावा, हिंदी के प्रयोग को लेकर झिझक भी एक बड़ी समस्या है। विशेषकर औपचारिक और तकनीकी कार्यों में लोग अंग्रेजी को प्राथमिकता देते हैं। प्रशिक्षण और जागरूकता का अभाव भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। कई कर्मचारी और उपयोगकर्ता हिंदी में उपलब्ध डिजिटल टूल्स और सुविधाओं से परिचित नहीं होते, जिसके कारण उनका उपयोग सीमित रह जाता है।

तकनीकी और संरचनात्मक बाधाएं

हिंदी फॉन्ट, सॉफ्टवेयर और प्लेटफॉर्म के बीच असंगति भी कभी–कभी कार्य में बाधा उत्पन्न करती है। सभी डिजिटल सिस्टम में हिंदी का समान रूप से समर्थन नहीं होने के कारण उपयोग में असुविधा होती है। इसके अलावा, मानकीकृत शब्दावली और एकरूपता का अभाव भी हिंदी के प्रभावी उपयोग में बाधा बनता है।

समाधान और आगे की दिशा

इन चुनौतियों से निपटने के लिए आवश्यक है कि हिंदी को सरल, व्यवहारिक और तकनीकी रूप से सक्षम बनाया जाए। नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएं और जागरूकता अभियान इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। तकनीकी शब्दावली का विकास और उसका मानकीकरण भी आवश्यक है, ताकि उपयोगकर्ता आसानी से हिंदी में कार्य कर सकें। साथ ही, डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिंदी के बेहतर समर्थन के लिए निरंतर प्रयास किए जाने चाहिए।सरकारी और निजी संस्थानों को मिलकर हिंदी को डिजिटल कार्य संस्कृति का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा।

कर्मचारियों और समाज की भूमिका

हिंदी के विकास में कर्मचारियों और आम नागरिकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने दैनिक कार्यों और संचार में हिंदी का प्रयोग बढ़ाए, तो यह भाषा स्वतः सशक्त होती जाएगी। कार्यालयों में हिंदी में नोटिंग, ड्राफ्टिंग और संवाद को प्रोत्साहित करना आवश्यक है। इससे न केवल राजभाषा के लक्ष्यों की पूर्ति होगी, बल्कि कार्यकुशलता भी बढ़ेगी।

निष्कर्ष

डिजिटल युग हिंदी के लिए एक स्वर्णिम अवसर लेकर आया है। तकनीकी प्रगति और बढ़ती मांग के कारण हिंदी का भविष्य अत्यंत उज्ज्वल है। यदि हम इसके अवसरों का सही उपयोग करें और चुनौतियों का समाधान करें, तो हिंदी न केवल भारत में, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी एक सशक्त और प्रभावी भाषा के रूप में स्थापित हो सकती है। हिंदी को अपनाना केवल कर्तव्य नहीं, बल्कि गर्व का विषय है–और यही इसे आगे बढ़ाने की सबसे बड़ी प्रेरणा है।

,,,,,,

स्तंभः

शाब्दिक अर्थ, अंतर और प्रयोग

(यह एक क्रमिक आलेख है....)

अर्चना मेहरा,
मुख्य प्रबंधक

शाब्दिक अर्थ और अंतर भाग–3 क्रमशः

पिछले लेख के दूसरे भाग में उपसर्ग और प्रत्यय के शब्दों के अर्थ में सूक्ष्म से व्यापक परिवर्तन और कुछ उदाहरण को प्रस्तुत किया गया था । इसी प्रकार के ऐसे शब्द जो लय और ध्वनि में साम्यता रखते हैं लेकिन उनके अर्थ और भाव में बदलाव आ जाता है।

"काश" मूल शब्द से बने कार्यालयध्प्रशासनिक प्रयोग में प्रचलित शब्द उसी निर्धारित प्रारूप में प्रस्तुत किए जा रहे हैं

शब्द	अंग्रेजी अर्थ	रचना	उपसर्ग / प्रत्यय	अर्थ	भाव / प्रयोग	वाक्य प्रयोग
आकाश	Sky	आ+काश	**उपसर्गःआ**	ऊपर का विस्तृत आकाश	सामान्य / भौतिक संदर्भ	आज आकाश स्वच्छ है।
आकाशीय	Aerial / Ce-lestial	आकाश+ईय	**प्रत्ययः ईय**	आकाश से संबंधित	तकनीकी / प्रशासनिक (रक्षा / विमानन)	आकाशीय सर्वेक्षण से क्षेत्र का मानचित्र तैयार किया गया।
आकाशमार्ग	Air Route	आकाश+ मार्ग	**समास**	हवाई रास्ता	परिवहन / लॉजिस्टिक्स	आपूर्ति के लिए आकाशमार्ग का उपयोग किया गया।
आकाशवाणी	Broadcasting (Radio)	आकाश+ वाणी	समास	आकाश के माध्यम से प्रसारित वाणी	सूचना / प्रसारण	सूचना का प्रसारण आकाशवाणी के माध्यम से किया गया।
आकाशवाणी केंद्र	Radio Station	आकाशवाणी + केंद्र	**पदबंध**	रेडियो प्रसारण का केंद्र	मीडिया / सूचना विभाग	कार्यक्रम का प्रसारण आकाशवाणी केंद्र से हुआ।
आकाशरेखा	Skyline / Horizon	आकाश+ रेखा	**समास**	आकाश और पृथ्वी की सीमा रेखा	भौगोलिक / योजना	शहर की आकाशरेखा में परिवर्तन हुआ है।
आकाशदीप	Sky Lamp / Beacon	आकाश+ दीप	**समास**	ऊँचाई पर लगाया गया प्रकाश	संकेत / सुरक्षा	भवन की छत पर आकाशदीप लगाया गया है।
आकाशदर्शन	Sky Observation	आकाश+ दर्शन	**समास**	आकाश का अवलोकन	वैज्ञानिक / तकनीकी	परियोजना में आकाशदर्शन उपकरणों का उपयोग हुआ
आकाशपथ	Air Corridor	आकाश+ पथ	**समास**	निर्धारित हवाई मार्ग	विमानन प्रबंधन	इस क्षेत्र के लिए नया आकाशपथ निर्धारित किया गया है।

शब्द	अंग्रेजी अर्थ	रचना	उपसर्ग / प्रत्यय	अर्थ	भाव / प्रयोग	वाक्य प्रयोग
आकाशसीमा	Airspace	आकाश+ सीमा	**समास**	किसी देशक्षेत्र का हवाई क्षेत्र	रक्षा / नियंत्रण	भारत की आकाशसीमा में अनधिकृत प्रवेश वर्जित है।
आकाशरक्षा	Air Defence	आकाश+ रक्षा	समास	हवाई हमलों से सुरक्षा व्यवस्था	सैन्य / रक्षा	सीमा पर आकाशरक्षा प्रणाली को सुदृढ़ किया गया है।
आकाशनिगरानी	Aerial Surveillance	आकाश+ निग. रानी	समास	आकाश से निगरानी करना	सुरक्षा / खुफिया	संवेदनशील क्षेत्रों में आकाशनिगरानी बढ़ाई गई है।
आकाशसर्वेक्षण	Aerial Survey	आकाश+ सर्वेक्षण	समास	हवाई माध्यम से भूमि का सर्वेक्षण	भू–मानचित्रण	परियोजना हेतु आकाशसर्वेक्षण कराया गया।
आकाशचित्रण	Aerial Imaging	आकाश+ चित्रण	समास	आकाश से तस्वीर / डेटा लेना	रिमोट सेंसिंग	क्षेत्र का आकाशचित्रण ड्रोन से किया गया।
आकाशयान	Aircraft	आकाश+ यान	समास	आकाश में चलने वाला यान	परिवहन / रक्षा	आकाशयान समय पर रनवे से उड़ान भरा।
आकाशतल	Sky Surface / Upper Layer	आकाश+ तल	समास	आकाश का ऊपरी स्तर	वैज्ञानिक / तकनीकी	अध्ययन में आकाशतल के आंकड़े शामिल हैं।
आकाशदूरी	Air Distance	आकाश+ दूरी	समास	सीधी हवाई दूरी	लॉजिस्टिक्स / परिवहन	दिल्ली से मुंबई की आकाशदूरी कम है।
आकाशपरिवहन	Air Transport	आकाश+ परिवहन	समास	हवाई माध्यम से परिवहन	लॉजिस्टिक्स / प्रबंधन	आपदा में आकाशपरिवहन का उपयोग किया गया।
आकाशमार्गीय सेवा	Air Route Service	आकाशमार्ग + ईय	प्रत्यय ईय	हवाई मार्ग से संबंधित सेवाएँ	विमानन प्रशासन	नई आकाशमार्गीय सेवा शुरू की गई है।
आकाशसंचार	Air Communication	आकाश. संचार	समास	हवाईध्वायरलेस संचार	दूरसंचार	आकाशसंचार प्रणाली को उन्नत किया गया है।
आकाशसिग्नल	Air Signal	आकाश. सिग्नल	समास	हवाई संकेत प्रणाली	रक्षा / संचार	आपात स्थिति में आकाशसिग्नल जारी किया गया।
आकाशआधारित निगरानी	Sky based Monitoring	आकाश+ आधारित. निगरानी	पदबंध	आकाश से आधारित निरीक्षण	तकनीकी / सुरक्षा	शहर में आकाश आधारित निगरानी लागू की गई।
आकाशप्रेक्षण	Sky Observation	आकाश+ प्रेक्षण	समास	आकाश का वैज्ञानिक अवलोकन	मौसम / अनुसंधान	मौसम विभाग द्वारा आकाशप्रेक्षण किया गया।
अवकाश	Leave / Recess	अव+काश	उपसगर्रू अव	कार्य से विराम / छुट्टी	कार्यालयीन उपयोग	कर्मचारी ने दो दिन का अवकाश लिया।

शब्द	अंग्रेजी अर्थ	रचना	उपसर्ग / प्रत्यय	अर्थ	भाव / प्रयोग	वाक्य प्रयोग
अवकाशप्राप्त	Retired	अवकाश+प्राप्त	पदबंध	सेवा से निवृत्त	प्रशासनिक	अधिकारी अवकाशप्राप्त हो चुके हैं।
अवकाशकाल	Leave Period	अवकाश+काल	समास	छुट्टी का समय	सेवा शर्तें	अवकाशकाल में कार्यभार अन्य अधिकारी को सौंपा गया।
प्रकाश	Light / Disclosure	प्र+काश	उपसर्ग प्र	उजागर करना, सामने लाना	सूचना का सार्वजनिक होना	आदेश का प्रकाश वि. भागीय वेबसाइट पर किया गया।
प्रकाशन	Publication	प्र+काश+अन	उपसर्ग प्र, प्रत्ययः अन	औपचारिक रूप से जारी करना	दस्तावेज निर्गमन	वार्षिक रिपोर्ट का प्रकाशन अगले माह होगा।
प्रकाशित	Published	प्र+काश+इत	उपसर्ग प्र, प्रत्ययः इत	जो जारी किया जा चुका हो	आधिकारिक सूचना	सूचना पहले ही पोर्टल पर प्रकाशित की जा चुकी है।
प्रकाशक	Publisher	प्र+काश+क	उपसर्ग प्र, प्रत्ययः क	प्रकाशन करने वाला	संस्था / व्यक्ति	इस पुस्तिका के प्रकाशक विभाग का प्रशिक्षण प्रकोष्ठ है।
प्रकाशनार्थ	For Publication	प्र+काश+अन + अर्थ	उपसर्ग प्र, प्रत्ययः अन	प्रकाशन के उद्देश्य से	औपचारिक प्रेषण	संलग्न सूचना प्रकाशनार्थ भेजी जा रही है।
प्रकाश्यता	Publishability	प्र+काश+ यता	उपसर्ग प्र, प्रत्ययः यता	प्रकाशित किए जाने की योग्यता	पारदर्शिता, उपयुक्तता	दस्तावेज की प्रकाश्यता पर विचार किया जा रहा है।
अप्रकाशित	Unpublished	अ+प्र+ काश+ इत	उपसर्ग अ, प्रय प्रत्ययः इत	जो प्रकाशित न हुआ हो	गोपनीय / अप्रकाशित सूचना	यह रिपोर्ट अभी अप्रकाशित है।
प्रकाशनयोग्य	Fit for Publication	प्र+काश+ अन+योग्य	उपसर्ग प्र, प्रत्ययः योग्य	जो प्रकाशित करने योग्य हो	गुणवत्ता / स्वीकृति	संशोधन के बाद दस्तावेज प्रकाशनयोग्य पाया गया।
प्रकाशकीय	Editorial / Publishing	प्र+काश+कीय	उपसर्ग प्र, प्रत्ययः कीय	प्रकाशन से संबंधित	संपादकीय / प्रकाशन कार्य	प्रकाशकीय टिप्पणी में दिशा–निर्देश दिए गए हैं।
प्रकाशिकी	Optics / Illumination Science	प्र+काश+इकी	उपसर्ग प्र, प्रत्ययः इकी	प्रकाश से संबंधित विज्ञान	तकनीकीध्वैज्ञानिक संदर्भ	परियोजना में प्रकाशिकी सिद्धांतों का उपयोग किया गया।

"कास" मूल शब्द से बने कार्यालय/प्रशासनिक प्रयोग में प्रचलित शब्द उसी निर्धारित प्रारूप में प्रस्तुत किए जा रहे हैं

शब्द	अंग्रेजी अर्थ	रचना	उपसर्ग/प्रत्यय	अर्थ	भाव / प्रयोग	वाक्य प्रयोग
निकास	Exit / Outlet	नि + कास	उपसर्गः नि	बाहर निकलने का मार्ग	भवन/प्रबंधन	आपातकालीन निकास द्वार हमेशा खुला रखना चाहिए।
निष्कासन	Evacuation / Removal	नि+कास+ अन	उपसर्गः नि, प्रत्ययः अन	बाहर निकालने की क्रिया	प्रशासनिक/ कानूनी	अवैध कब्जे का निष्कासन किया गया।
निष्कासित	Evacuated / Removed	नि+ कास +इत	उपसर्गः नि, प्रत्ययःइत	जिसे बाहर निकाला गया हो	अनुशासन/ कार्रवाई	नियम उल्लंघन पर कर्मचारी को निष्कासित किया गया।
विकास	Develop -ment	वि+कास	उपसर्गः वि	विस्तार/प्रगति	नीति/ योजना	ग्रामीण विकास हेतु नई योजनाएँ लागू की गईं।
विकसित	Developed	वि+कास +इत	उपसर्ग वि, प्रत्ययः इत	जो विकसित हो चुका हो	प्रगति/ स्थिति	यह क्षेत्र तेजी से विकसित हो रहा है।
विकासात्मक	Develop -mental	विकास+ आत्मक	प्रत्ययः आत्मक	विकास से संबंधित	नीतिगत/ प्रशासनिक	सरकार ने विकासात्मक कार्यक्रम शुरू किए।
विकासशील	Developing	विकास+शील	प्रत्ययः शील	जो विकास की प्रक्रिया में हो	आर्थिक/ सामाजिक	भारत एक विकासशील देश है।
विकासोन्मुख	Development -oriented	विकास+ उन्मुख	प्रत्ययः उन्मुख	विकास की ओर उन्मुख	नीति/ दृष्टिकोण	बजट विकासोन्मुख नीतियों पर केंद्रित है।
परिकास (अल्प प्रचलित)	Expansin (rare)	परि+कास	उपसर्ग परि	चारों ओर विस्तार	साहित्यिक/ कम प्रयोग	यह शब्द प्रशासनिक प्रयोग में कम आता है।
निकास	Exit / Outlet	नि+कास	उपसर्ग नि	बाहर निकलने का मार्ग	भवन/ प्रबंधन	आपातकालीन निकास द्वार हमेशा खुला रखना चाहिए।
निष्कासन	Evacuation / Removal	नि+कास+ अन	उपसर्ग नि, प्रत्ययः अन	बाहर निकालने की क्रिया	प्रशासनिक/ कानूनी	अवैध कब्जे का निष्कासन किया गया।
निष्कासित	Evacuated / Removed	नि+कास+ इत	उपसर्ग नि, प्रत्ययः इत	जिसे बाहर निकाला गया हो	अनुशासन/ कार्रवाई	नियम उल्लंघन पर कर्मचारी को निष्कासित किया गया।
विकास	Development	वि+कास	उपसर्ग वि	विस्तार/प्रगति	नीति/ योजना	ग्रामीण विकास हेतु नई योजनाएँ लागू की गईं।

शब्द	अंग्रेजी अर्थ	रचना	उपसर्ग / प्रत्यय	अर्थ	भाव / प्रयोग	वाक्य प्रयोग
विकसित	Developed	वि+कास + इत	उपसर्ग वि, प्रत्ययः इत	जो विकसित हो चुका हो	प्रगति / स्थिति	यह क्षेत्र तेजी से विक. सित हो रहा है।
विकासात्मक	Developmental	विकास+ आत्मक	प्रत्ययः आत्मक	विकास से संबंधित	नीतिगत / प्रशासनिक	सरकार ने विका. सात्मक कार्यक्रम शुरू किए।
विकासशील	Developing	विकास+ शील	प्रत्ययः शील	जो विकास की प्रक्रिया में हो	आर्थिक / सामाजिक	भारत एक विकासशील देश है।
विकासोन्मुख	Develop-ment-oriented	विकास+ उन्मुख	प्रत्ययः उन्मुख	विकास की ओर उन्मुख	नीति / दृष्टिकोण	बजट विकासोन्मुख नीतियों पर केंद्रित है।
परिकास (अल्प प्रचलित)	Expansion (rare)	परि+ कास	उपसर्ग परि	चारों ओर विस्तार	साहित्यिक / कम प्रयोग	यह शब्द प्रशासनिक प्रयोग में कम आता है।
निकास	Exit / Outlet	नि+कास	उपसर्ग नि	बाहर निकलने का मार्ग	भवन / प्रबंधन	आपातकालीन निकास द्वार हमेशा खुला रखना चाहिए।
निष्कासन	Evacuation / Removal	नि+कास+अन	उपसर्ग नि, प्रत्ययः अन	बाहर निकालने की क्रिया	प्रशासनिक / कानूनी	अवैध कब्जे का निष्कासन किया गया।
निष्कासित	Evacuated / Removed	नि+कास+इत	उपसर्ग नि+ प्रत्ययः इत	जिसे बाहर निकाला गया हो	अनुशासन कार्रवाई	नियम उल्लंघन पर कर्मचारी को निष्कासित किया गया।
विकास	Development	वि+कास	उपसर्ग वि	विस्तार / प्रगति	नीति / योजना	ग्रामीण विकास हेतु नई योजनाएँ लागू की गईं।
विकसित	Developed	वि+कास+इत	उपसर्ग वि, प्रत्ययः इत	जो विकसित हो चुका हो	प्रगति / स्थिति	यह क्षेत्र तेजी से विकसित हो रहा है।
विकासात्मक	Developmental	विकास+ आत्मक	प्रत्ययः आत्मक	विकास से संबंधित	नीतिगत / प्रशासनिक	सरकार ने विकासात्मक कार्यक्रम शुरू किए।
विकासशील	Developing	विकास+ शील	प्रत्ययः शील	जो विकास की प्रक्रिया में हो	आर्थिक / सामाजिक	भारत एक विकासशील देश है।
विकासोन्मुख	Develop-ment-oriented	विकास+ उन्मुख	प्रत्ययः उन्मुख	विकास की ओर उन्मुख	नीति / दृष्टिकोण	बजट विकासोन्मुख नीतियों पर केंद्रित है।
परिकास (अल्प प्रचलित)	Expansion (rare)	परि+कास	उपसर्ग परि	चारों ओर विस्तार	साहित्यिक / कम प्रयोग	यह शब्द प्रशासनिक प्रयोग में कम आता है।

गजल – मुश्किल है....

पुखराज मीना,
सहायक प्रबंधक

बड़ा आसान होता है किसी पर ये दिल आ जाना,
मुश्किल है ता–उम्र उसी का ही होकर रह जाना।

झूठा अपनापन तो हर कोई दिखाता है अब यहाँ,
मुश्किल है औरों की मुसीबत में साथ निभा जाना।

अपनी गलतियों को तो हर कोई छुपाता है यहाँ,
मुश्किल है दूसरों की गलती को भी छिपा जाना।

अभाव में तो सभी झुककर चला करते हैं यहाँ,
मुश्किल है सब पाकर भी विनम्र बने रह जाना।

दूसरे की राह में अड़चन हर कोई पैदा करता यहाँ,
मुश्किल है किसी बेसहारा का सहारा बन जाना।

किसी को भी"पुखराज" सब कुछ हासिल नहीं यहाँ,
मुश्किल है जो मिला उसमें श्रेष्ठतम पेश कर जाना।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

भावार्थः– ॐ के उच्चारण में ही तीनो शक्तियों का समावेश हैं । हे माँ भगवती जिसने सभी शक्तियों का सर्जन किया ऐसी प्राणदायिनी, दुःख हरणी, सुख करणी, समस्त रोगों का निवारण करने वाली, प्रज्ञावान माँ भगवती जो सभी देवों की देवी हैं उसकी में उपासना करती हूँ जिसने मुझे संरक्षण दिया और सभी प्रकार के ज्ञान से समृद्ध बनाया ।

पुस्तकालय कोना

जयशंकर प्रसाद – छायावाद के महान हिंदी साहित्यकार

श्रीमती ज्योति रानी
कनिष्ठ सहायक

जयशंकर प्रसाद का जन्म 30 जनवरी, 1889 को उत्तर प्रदेश के धार्मिक एवं सांस्कृतिक नगर वाराणसी में हुआ था। उनका परिवार आर्थिक रूप से समृद्ध एवं प्रतिष्ठित था, किंतु बाल्यावस्था में ही माता–पिता के निधन ने उनके जीवन को संघर्षमय बना दिया। विपरीत परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने अद्भुत आत्मबल और जिज्ञासा के सहारे स्वाध्याय द्वारा संस्कृत, हिंदी, फारसी तथा उर्दू भाषाओं का गहन अध्ययन किया। यही व्यापक अध्ययन आगे चलकर उनके साहित्यिक व्यक्तित्व की गहराई और वैचारिक समृद्धि का आधार बना। उनका निधन 15 नवंबर, 1937 को हुआ, किंतु अल्पायु में ही उन्होंने हिंदी साहित्य को अमूल्य धरोहर प्रदान की।

जयशंकर प्रसाद हिंदी साहित्य के छायावाद युग के प्रमुख स्तंभों में से एक थे। उन्हें छायावाद का प्रवर्तक एवं प्रतिनिधि साहित्यकार माना जाता है। वे केवल महान कवि ही नहीं, बल्कि उच्चकोटि के नाटककार, उपन्यासकार, कहानीकार एवं निबंधकार भी थे। उनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति, इतिहास, दर्शन और मानवीय संवेदनाओं का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। उन्होंने अपनी साहित्य साधना के माध्यम से हिंदी साहित्य को नई दिशा, नई चेतना और नई अभिव्यक्ति प्रदान की।

उनकी अमर कृति कामायनी हिंदी साहित्य की सर्वश्रेष्ठ कृतियों में गिनी जाती है। इस महाकाव्य में उन्होंने मानव सभ्यता के विकास, मनोवैज्ञानिक संघर्षों तथा जीवन–दर्शन का अत्यंत गहन एवं दार्शनिक चित्रण किया है। इसके अतिरिक्त आँसू में करुणा एवं मानवीय संवेदनाओं की मार्मिक अभिव्यक्ति मिलती है, जबकि स्कंदगुप्त जैसे ऐतिहासिक नाटकों के माध्यम से उन्होंने भारतीय गौरव, राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक मूल्यों को सशक्त स्वर प्रदान किया।

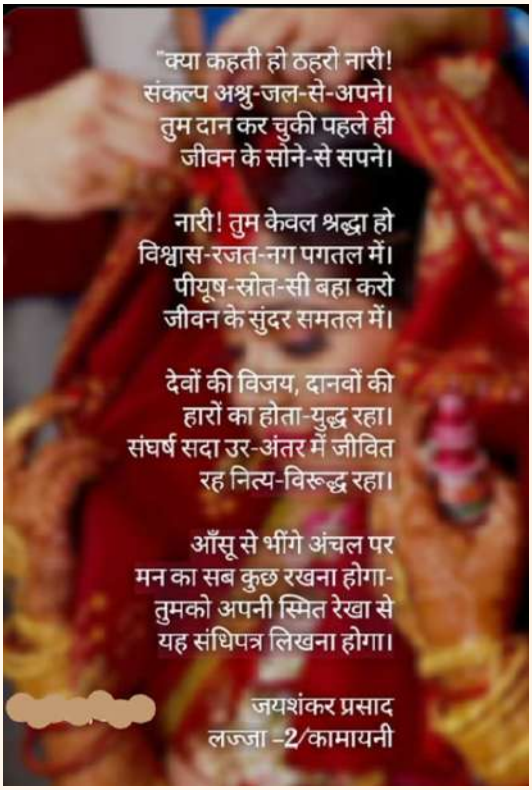

प्रसाद जी के काव्य का मूल स्वर प्रेम, सौंदर्य, प्रकृति एवं मानवीय संवेदनाओं से अनुप्राणित है। उनकी रचनाओं में आध्यात्मिक आनंदवाद और मानवीय करुणा का अद्भुत सामंजस्य देखने को मिलता है। वे सूक्ष्म भावनाओं और प्रकृति के सौंदर्य को अत्यंत कलात्मक एवं प्रतीकात्मक शैली में अभिव्यक्त करने में सिद्धहस्त थे। उनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ, तत्सम प्रधान एवं अत्यंत परिष्कृत थी, जिसमें नाद–सौंदर्य, लाक्षणिकता तथा प्रतीक योजना

का अद्भुत प्रयोग मिलता है।

जयशंकर प्रसाद ने अपनी मौलिक प्रतिभा और सृजनात्मक दृष्टि से हिंदी साहित्य को समृद्ध एवं गौरवशाली बनाया। उनकी साहित्य साधना ने हिंदी साहित्य को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया, जिसके कारण उन्हें आधुनिक हिंदी साहित्य का "युग–प्रवर्तक" साहित्यकार कहा जाता है। आज भी उनकी रचनाएं साहित्य प्रेमियों एवं शोधकर्ताओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हुई हैं।

प्रमुख रचनाएँ:

महाकाव्यः कामायनी

काव्यः आँसू, झरना, लहर, कानन कुसुम, चित्राधार, प्रेम पथिक

नाटकः स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, अजातशत्रु, राज्यश्री

उपन्यासः कंकाल, तितली, इरावती (अपूर्ण)

कहानी संग्रहः छाया, आँधी, प्रतिध्वनि, इंद्रजाल, आकाशदीप

निबंध संग्रहः काव्य और कला तथा अन्य निबंध

'आकाशदीप'

प्रकाशन वर्षः 1929 प्रकाशकः भारती भंडार, इलाहाबाद एनएसएफडीसी/1457

'आकाशदीप' की कथा एक ऐसे पात्र से आरंभ होती है, जो जीवन की अनेक कठिनाइयों और प्रतिकूल परिस्थितियों से घिरा होने के बावजूद अपने अंतर्मन के "आकाशदीप" को बुझने नहीं देता। विपरीत हालातों में भी वह धैर्य, साहस और अटूट आत्मविश्वास के साथ निरंतर संघर्ष करता रहता है। उसके भीतर की आशा और सकारात्मक दृष्टिकोण उसे निराशा के अंधकार में डूबने नहीं देते, बल्कि आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। अंततः उसकी दृढ़ इच्छाशक्ति और सतत प्रयास उसे सफलता एवं सुख की प्राप्ति तक पहुँचा देते हैं।

यह प्रेरक कथा हमें यह संदेश देती है कि जीवन की कठिनतम परिस्थितियों में भी अपने भीतर के विश्वास, आशा और उत्साह के दीप को प्रज्वलित बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। निराशा से दूर रहकर निरंतर प्रयास करते रहना ही सफलता की वास्तविक कुंजी है।

चन्द्रगुप्त

प्रकाशन वर्ष 1931 प्रकाशक' राजपाल एंड संस एनएसएफडीसी/2254

जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'चन्द्रगुप्त' हिंदी साहित्य का एक कालजयी ऐतिहासिक नाटक है। इस नाटक में चंद्रगुप्त मौर्य के उत्थान, आचार्य चाणक्य की सूक्ष्म कूटनीति, मगध के नंद वंश के पतन तथा सिकंदर के आक्रमण के संदर्भ में भारतीय राष्ट्रीय एकता एवं स्वाभिमान का सशक्त चित्रण किया गया है।

यह नाटक चार अंकों एवं 44 दृश्यों में विभाजित है, जिसमें इतिहास और कल्पना का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। कथा में एक ओर राष्ट्रहित, कर्तव्य और राजनीतिक दूरदर्शिता का चित्रण है, तो दूसरी ओर प्रेम, त्याग और मानवीय भावनाओं का भी प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण किया गया है।

'चन्द्रगुप्त' के माध्यम से प्रसाद जी ने यह संदेश दिया है कि संगठित प्रयास, दृढ़ संकल्प और दूरदर्शी नेतृत्व के बल पर किसी भी राष्ट्र को सशक्त एवं स्वतंत्र बनाया जा सकता है। यह नाटक न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि राष्ट्रीय चेतना एवं सांस्कृतिक गौरव का प्रेरणादायक दस्तावेज भी है।

स्कंदगुप्त

प्रकाशन वर्षः 1928 प्रकाशकः भारती भंडार, इलाहाबाद एनएसएफडीसी/1676

जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'स्कंदगुप्त' (1928) एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक नाटक है, न कि कहानी। यह कृति गुप्त वंश के पराक्रमी सम्राट स्कंदगुप्त के जीवन, हूणों के आक्रमणों तथा गुप्त साम्राज्य के राजनीतिक संघर्षों (लग. भग 455–466 ई.) पर आधारित है।

नाटक में राष्ट्रभक्ति, त्याग, वीरता, प्रेम और ईर्ष्या जैसे विविध मानवीय भावों का सशक्त चित्रण किया गया है। देवसेना और विजया जैसे पात्रों के माध्यम से प्रसाद जी ने मानवीय संबंधों की संवेदनशीलता के साथ–साथ भारतीय संस्कृति, आदर्शों और नैतिक मूल्यों को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है।

'स्कंदगुप्त' केवल ऐतिहासिक घटनाओं का पुनर्निर्माण नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक गौरव और आत्मबल का प्रेरणादायक प्रस्तुतीकरण है, जो आज भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है।

'छाया'

प्रकाशन वर्षः 1912 प्रकाशकः भारती भंडार, इलाहाबाद

छाया जयशंकर प्रसाद का प्रथम ऐतिहासिक एवं यथार्थवादी कहानी–संग्रह माना जाता है, जिसमें कुल 11 कहानियों का संकलन है। यह कृति प्रसाद जी की आरंभिक कथात्मक प्रतिभा का महत्वपूर्ण परिचायक है, जिसमें भारतीय संस्कृति, इतिहास, प्रेम, प्रकृति तथा मानवीय संवेदनाओं का अत्यंत प्रभावशाली समन्वय देखने को मिलता है। इस संग्रह में उन्होंने प्राचीन भारतीय जीवन–मूल्यों और आधुनिक चेतना के बीच संतुलन स्थापित करने का सफल प्रयास किया है।

'छाया' की कहानियाँ भावप्रधान, ऐतिहासिक तथा समस्यामूलक विषयों पर आधारित हैं। इन कहानियों में मानव मन की सूक्ष्म भावनाओं, संवेदनाओं और अंतर्द्वंद्वों का अत्यंत मार्मिक एवं कलात्मक चित्रण किया गया है। प्रसाद जी ने अपने विशिष्ट साहित्यिक दृष्टिकोण के माध्यम से जीवन के भावुक, संवेदनशील एवं मानवीय पक्षों को गहराई से अभिव्यक्त किया है। उनकी कथाशैली में काव्यात्मकता, सौंदर्यबोध तथा भावात्मक गहनता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है, जो पाठकों को गहरे स्तर पर प्रभावित करती है।

यह कहानी–संग्रह केवल उनके प्रारंभिक लेखन का दस्तावेज मात्र नहीं है, बल्कि उनके ऐतिहासिक दृष्टिकोण, सांस्कृतिक चेतना और मानवीय संवेदनशीलता का भी महत्वपूर्ण दर्पण है। 'छाया' के माध्यम से प्रसाद जी ने हिंदी कहानी साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की तथा कथाकार के रूप में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई। यही संग्रह आगे चलकर उनके अधिक परिपक्व एवं चर्चित कहानी–संग्रहों, जैसे आकाशदीप और इंद्रजाल, की आधारभूमि सिद्ध हुआ।

कामायनी

प्रकाशन वर्ष 1935–1936 प्रकाशक (प्रथम): भारतीय भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद । एनएसएफडीसी/1677

कामायनी जयशंकर प्रसाद की सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं कालजयी कृति है, जिसमें मानव जीवन की भावनाओं, मनोवैज्ञानिक अवस्थाओं तथा सांस्कृतिक विकास का अत्यंत गहन एवं दार्शनिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इस महाकाव्य में श्रद्धा, काम, इड़ा तथा अन्य मानवीय भावनाओं एवं प्रवृत्तियों के माध्यम से जीवन के गूढ़ अर्थों और मानव चेतना के विविध आयामों को अभिव्यक्ति प्रदान की गई है।

प्रसाद जी ने इस कृति में मनु और श्रद्धा को केंद्र में रखकर मानव सभ्यता के आदि काल से लेकर उसके मानसिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विकास की यात्रा का अत्यंत कलात्मक चित्रण किया है। मनु मानव बुद्धि, चिंतन और कर्म के प्रतीक हैं, जबकि श्रद्धा प्रेम, विश्वास और संवेदना का प्रतिनिधित्व करती है। इन पात्रों के माध्यम से

कवि ने मानव जीवन में बुद्धि और भावना के संतुलन की आवश्यकता को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

यह महाकाव्य केवल पौराणिक कथा का पुनर्पाठ नहीं है, बल्कि मानव जीवन, उसकी जिज्ञासाओं, संघर्षों, इच्छाओं और आत्मिक विकास का गहन मनोवैज्ञानिक एवं दार्शनिक आख्यान है। 'कामायनी' में प्रसाद जी ने यह प्रतिपादित किया है कि मानव जीवन का वास्तविक संतुलन बुद्धि, भावना और कर्म के समन्वय में निहित है। यही कारण है कि यह कृति हिंदी साहित्य में एक अद्वितीय महाकाव्य के रूप में प्रतिष्ठित है और आज भी अपनी वैचारिक गहराई एवं साहित्यिक उत्कृष्टता के कारण अत्यंत प्रासंगिक मानी जाती है।

तितली

प्रकाशन वर्ष 1934 (मुख्यतः मान्य) प्रकाशक (मूल) : भारती भंडार, इलाहाबादएनएसएफडीसी/3062

तितली (1934) जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित एक महत्वपूर्ण प्रगतिशील उपन्यास है, जिसमें ग्रामीण जीवन, कृषक समस्याओं, सामाजिक विषमताओं तथा नारी सशक्तिकरण जैसे विषयों को अत्यंत संवेदनशील और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। यह उपन्यास भारतीय ग्रामीण समाज की वास्तविक परिस्थितियों, सामंती व्यवस्था के दुष्प्रभावों तथा सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

उपन्यास की कथा 'तितली' नामक एक साहसी, संवेदनशील एवं आत्मसम्मान से परिपूर्ण युवती के इर्द–गिर्द विकसित होती है। तितली केवल एक पात्र नहीं, बल्कि संघर्ष, आत्मबल और नारी चेतना का सशक्त प्रतीक है। वह सामाजिक बंधनों, रूढ़ियों और सामंती शोषण के विरुद्ध साहसपूर्वक संघर्ष करती है तथा अपने अस्तित्व एवं सम्मान की रक्षा के लिए निरंतर प्रयासरत रहती है। उसके चरित्र के माध्यम से प्रसाद जी ने नारी के आत्मसम्मान, स्वतंत्र चिंतन और सामाजिक चेतना को सशक्त स्वर प्रदान किया है।

इस उपन्यास में लेखक ने ग्रामीण समाज की आर्थिक विषमताओं, किसानों की कठिनाइयों तथा शोषण की समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। साथ ही, उन्होंने प्रेम, मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक सुधार की भावना को भी कथा के केंद्र में रखा है। 'तितली' में आदर्शवाद और यथार्थवाद का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है, जहाँ एक ओर सामाजिक यथार्थ की कठोरता है, वहीं दूसरी ओर मानवीय मूल्यों, प्रेम और परिवर्तन की आशा भी विद्यमान है।

प्रसाद जी ने इस उपन्यास के माध्यम से यह संदेश देने का प्रयास किया है कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन तभी संभव है जब मानवता, समानता और न्याय के मूल्यों को अपनाया जाए। 'तितली' हिंदी उपन्यास साहित्य की एक महत्वपूर्ण कृति है, जो अपने सामाजिक सरोकारों, प्रगतिशील दृष्टिकोण और सशक्त नारी पात्र के कारण आज भी विशेष महत्व रखती है।

'कंकाल'

प्रकाशन वर्ष 1929 प्रकाशक' भारती भंडार, इलाहाबाद एनएसएफडीसी/3061

कंकाल (1929) जयशंकर प्रसाद की एक महत्वपूर्ण यथार्थवादी कृति है, जिसका प्रमुख उद्देश्य तत्कालीन भारतीय समाज में व्याप्त धार्मिक आडंबरों, रूढ़ियों, सामाजिक विषमताओं एवं पाखंड का प्रभावशाली ढंग से उद्घाटन करना है। यह उपन्यास अपने समय की सामाजिक संरचना और उसके अंतर्विरोधों को निर्भीकता के साथ सामने लाता है।

'कंकाल' में प्रसाद जी ने वेश्यालयों की दुनिया, विधवाओं की दयनीय स्थिति तथा नारी के शोषण जैसे संवेदनशील विषयों का यथार्थ चित्रण किया है। उन्होंने समाज के उन पक्षों को उजागर किया, जिन्हें सामान्यतः उपेक्षित या छिपाया जाता रहा है। इस प्रकार यह उपन्यास सामाजिक कुरीतियों पर तीखा प्रहार करता है और पाठकों को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है।

इस कृति के माध्यम से लेखक ने यह संदेश दिया है कि समाज में व्याप्त अंधविश्वास, पाखंड और असमानताओं को समाप्त कर एक ऐसे समाज की स्थापना आवश्यक है, जो उदार मानवीय मूल्यों, समानता, संवेदनशीलता और तर्कसंगत दृष्टिकोण पर आधारित हो। 'कंकाल' न केवल एक यथार्थवादी उपन्यास है, बल्कि सामाजिक जागरण का एक सशक्त माध्यम भी है, जो आज भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जयशंकर प्रसाद हिंदी साहित्य के एक युगनिर्माता एवं दूरदर्शी साहित्यकार थे। उन्होंने छायावाद को न केवल नई दिशा और वैचारिक गहराई प्रदान की, बल्कि अपनी अद्वितीय साहित्य साधना के माध्यम से हिंदी साहित्य को गौरवपूर्ण ऊँचाइयों तक पहुँचाया। उनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति, मानवीय संवेदनाओं, सौंदर्यबोध और दार्शनिक चिंतन का जो अद्भुत समन्वय दिखाई देता है, वह उन्हें हिंदी साहित्य के महानतम रचनाकारों में विशिष्ट स्थान प्रदान करता है। उनका साहित्य आज भी अपनी भावात्मक गहनता, वैचारिक समृद्धि और कलात्मक उत्कृष्टता के कारण उतना ही प्रासंगिक, प्रेरणादायक एवं पथप्रदर्शक बना हुआ है।

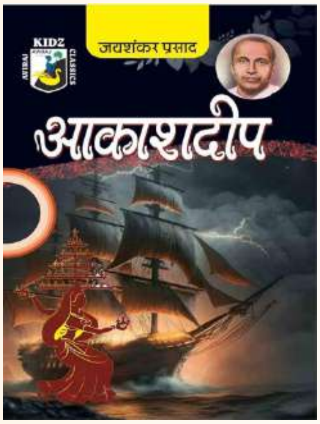

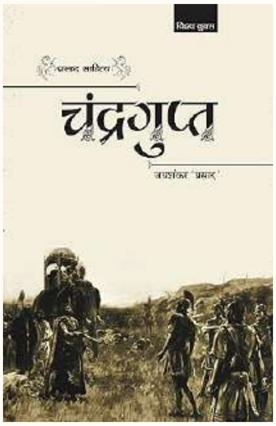

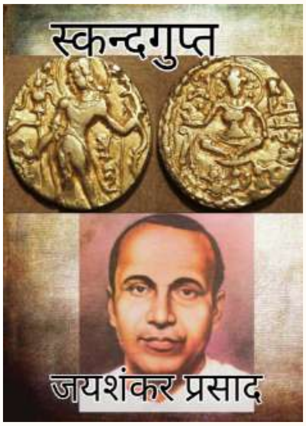

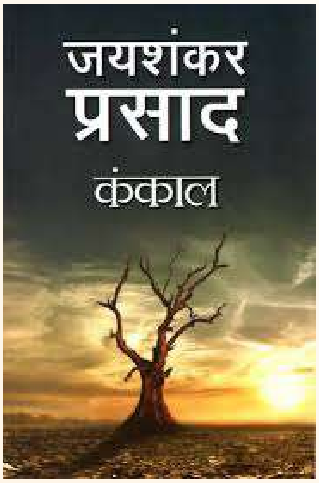

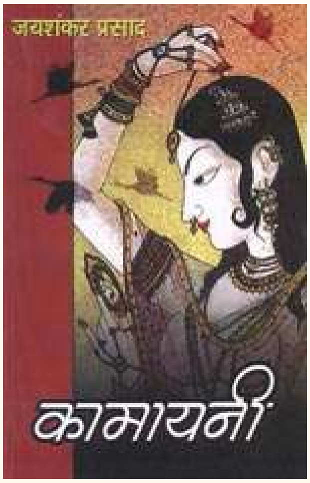

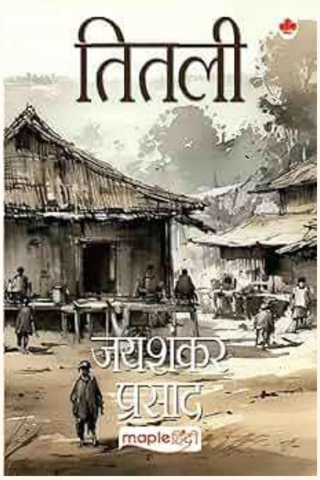

जन्मदिन की बधाई

01 जनवरी
श्री सतीश कुमार
वरिष्ठ सहायक

04 जनवरी
श्री नंद किशोर
प्रबंधक

06 जनवरी
श्रीमती रेनु
सहायक प्रबंधक

09 जनवरी
श्रीमती पूजा रानी
कनिष्ठ कार्यपालक

18 जनवरी
श्री तपेश्वर पाल
ड्राइवर (सीनियर ग्रेड)

23 जनवरी
श्री सुशील कुमार
प्रबंधक

1 फरवरी
श्रीमती ज्योति रानी
कनिष्ठ सहायक

12 फरवरी
श्रीमती रचना देवी
कनिष्ठ कार्यपालक

15 फरवरी
श्री संदीप कुमार
प्रबंधक

23 फरवरी
डॉ. वी आर साल्कुटे
सहायक महाप्रबंधक

1 मार्च
श्री रीत लाल पासवान
सहायक

4 मार्च
श्री सुरेंद्र कुमार
उप प्रबंधक

06 मार्च
श्री गंगा सरन
वरिष्ठ सहायक

10 मार्च
श्रीमती सुधा
सहायक प्रबंधक

14 मार्च
श्री नवीन कुमार
सहायक प्रबंधक

31 मार्च
श्रीमती विजय लक्ष्मी बी
सहायक प्रबंधक

नेशनल शेड्यूल्ड कास्ट्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन
(सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार का उपक्रम)
14वीं मंजिल, स्कोप मीनार, कोर 1 और 2, लक्ष्मी नगर डिस्ट्रिक्ट सेंटर, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092
टोल फ्री नं. 1800110396, ई-मेल: support-nsfdc@nic.in, वेबसाइट: www.nsfdc.nic.in
फ़ोन: 011-22054391-92, 22054394, 22054396 : फ़ैक्स: 011-22054349

अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के लिए सुनहरा अवसर

नेशनल शेड्यूल्ड कास्ट्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (एनएसएफडीसी) की स्थापना दिनांक 08.02.1989 को कंपनी अधिनियम 1956 के तहत एक लाभ निरपेक्ष कंपनी के रूप में की गई थी। कंपनी अधिनियम, 2013 के लागू होने के उपरांत, एनएसएफडीसी नए अधिनियम के तहत वर्तमान में धारा-8 कंपनी (लाभ निरपेक्ष) है। एनएसएफडीसी का मुख्य उद्देश्य अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के सामाजिक-आर्थिक विकास में सहायता करना है, जिनकी वार्षिक पारिवारिक आय रु3.00 लाख तक है।

एनएसएफडीसी की ऋण योजनाएं

योजना	परियोजना लागत	अधिकतम ऋण सीमा परियोजना लागत का 90% तक	प्रति वर्ष ब्याज दर		ऋण पुनर्भुगतान की अवधि	अधिस्थगन अवधि
			सीए	लाभार्थी		
एससीए/ पीएसबी/ आरआरबी के माध्यम से क्रियान्वित की जाने वाली योजनाएं						
माइक्रो फाइनेंस योजना	रु1.40 लाख तक	रु1.25 लाख तक	2.5%	6.5%	3 वर्षों के भीतर	3 महीने
मियादी ऋण	> रु1.40 लाख से रु50.00 लाख तक	> रु1.25 लाख से रु45.00 लाख तक	4%	8%	7 वर्षों के भीतर	6 महीने, वृक्षारोपण एवं निर्माण गतिविधियों को छोड़कर जिसके लिए 12 महीने का समय होगा
शिक्षा ऋण						
शिक्षा ऋण योजना (ईएलएस)	शिक्षा ऋण योजना (भारत एवं विदेश में अध्ययन के लिए) रु40.00 लाख तक या पाठ्यक्रम शुल्क का 90%, जो भी कम हो		2.5%	6.5%	= शिक्षा ऋण परियोजना-वित्त (एससीए) और पुनर्वित्त दावों (बैंकों) के लिए जहां पुनर्भुगतान प्रारंभ नहीं हुआ है: 12 **वर्ष तक।** = शिक्षा ऋण पुनर्वित्त दावों के लिए, जहां ऋण का संवितरण किया जा चुका है और ऋण पुनर्भुगतान प्रारंभ हो चुका है: **10 वर्ष तक।**	= शिक्षा ऋण परियोजना - वित्त (एससीए) और पुनर्वित्त दावों (बैंकों) के लिए जहां पुनर्भुगतान शुरू नहीं हुआ है: **पाठ्यक्रम अवधि + 1 (एक) वर्ष।** = शिक्षा ऋण पुनर्वित्त दावों के लिए, जहां ऋण पहले ही संवितरित किया जा चुका है और ऋण का पुनर्भुगतान शुरू हो चुका है: **6 (छह) महीने तक।**
एनबीएफसी-एमएफआई के माध्यम से कार्यान्वित की जाने वाली योजना						
आजीविका माइक्रो फाइनेंस योजना (एएमवाई)	रु1.40 लाख तक	रु1.25 लाख	5%	15%	3 वर्षों के भीतर	3 महीने
सहकारी समितियों/ सहकारी बैंकों के माध्यम से क्रियान्वित की जाने वाली योजना						
उद्यम निधि योजना (यूएनवाई)	रु5.00 लाख तक	रु4.50 लाख	5%	13%	5 वर्षों के भीतर	3 महीने
कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम (पीएम-दक्ष)						
गैर-आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए प्रशिक्षण संस्थान को 100% अनुदान और प्रति प्रशिक्षु रु1500 प्रतिमाह की दर से वजीफा (Stipend), जिनकी प्रशिक्षण के दौरान उपस्थिति कुल 80% और उससे अधिक तथा आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के मामले में भोजन और आवास की लागत सामान्य मानदंडों के अनुसार।						

अनुविनि

nsfdc

नेशनल शेड्यूलड कास्ट्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन

(सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय,भारत सरकार का उपक्रम)

NATIONAL SCHEDULED CASTES FINANCE AND DEVELOPMENT CORPORATION

A Government of India Undertaking

(आई एस ओ 9001 :2015 प्रमाणित कंपनी)

(An ISO 9001:2015 Certified company)

14वीं मंजिल, कोर-1 और 2, स्कोप मीनार, लक्ष्मी नगर, जिला सेंटर, दिल्ली-110092
14th Floor, Core-1 & 2, SCOPE Minar, Laxmi Nagar, District Centre, Delhi-110092
फ़ोन/Phone: 011-22054392, 22054394, 22054396
टोल फ्री नंबर/Toll Free Number: 1800 11 0396
ई-मेल/E-mail: support-nsfdc@nic.in वेबसाइट/Website: www.nsfdc.nic.in

Designing & Printing by Double8 Event & Advertising Pvt. Ltd. - 2026